विशेषांक

साधना और सेवा का संगम

वात्सल्य निर्झर

50/-

मई 2026

विक्रम सम्वत् 2083

जननी जनमती है माँ सहेजती है।

वात्सल्य ग्राम

वात्सल्य ग्राम की संस्थापिका
परम पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी

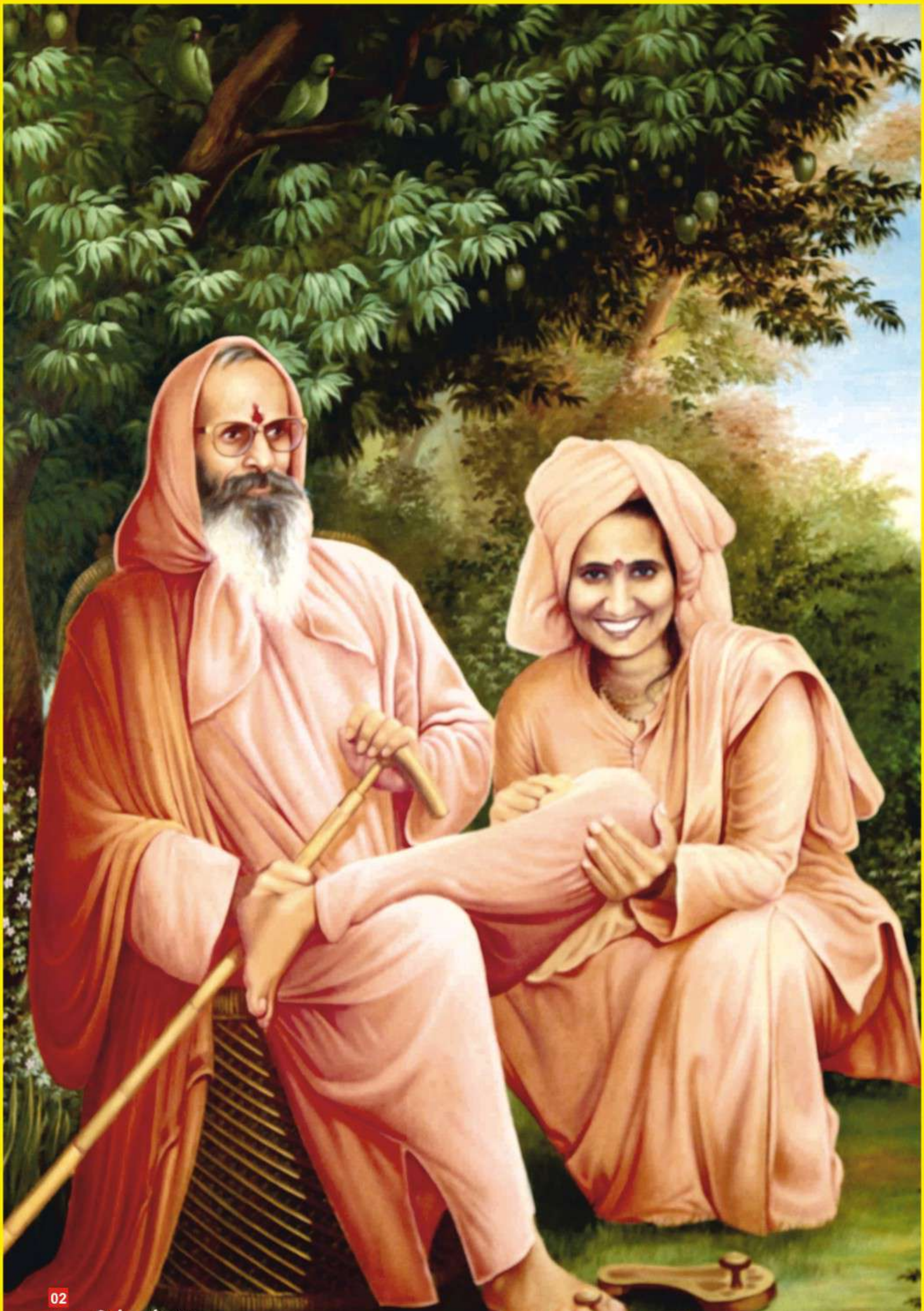

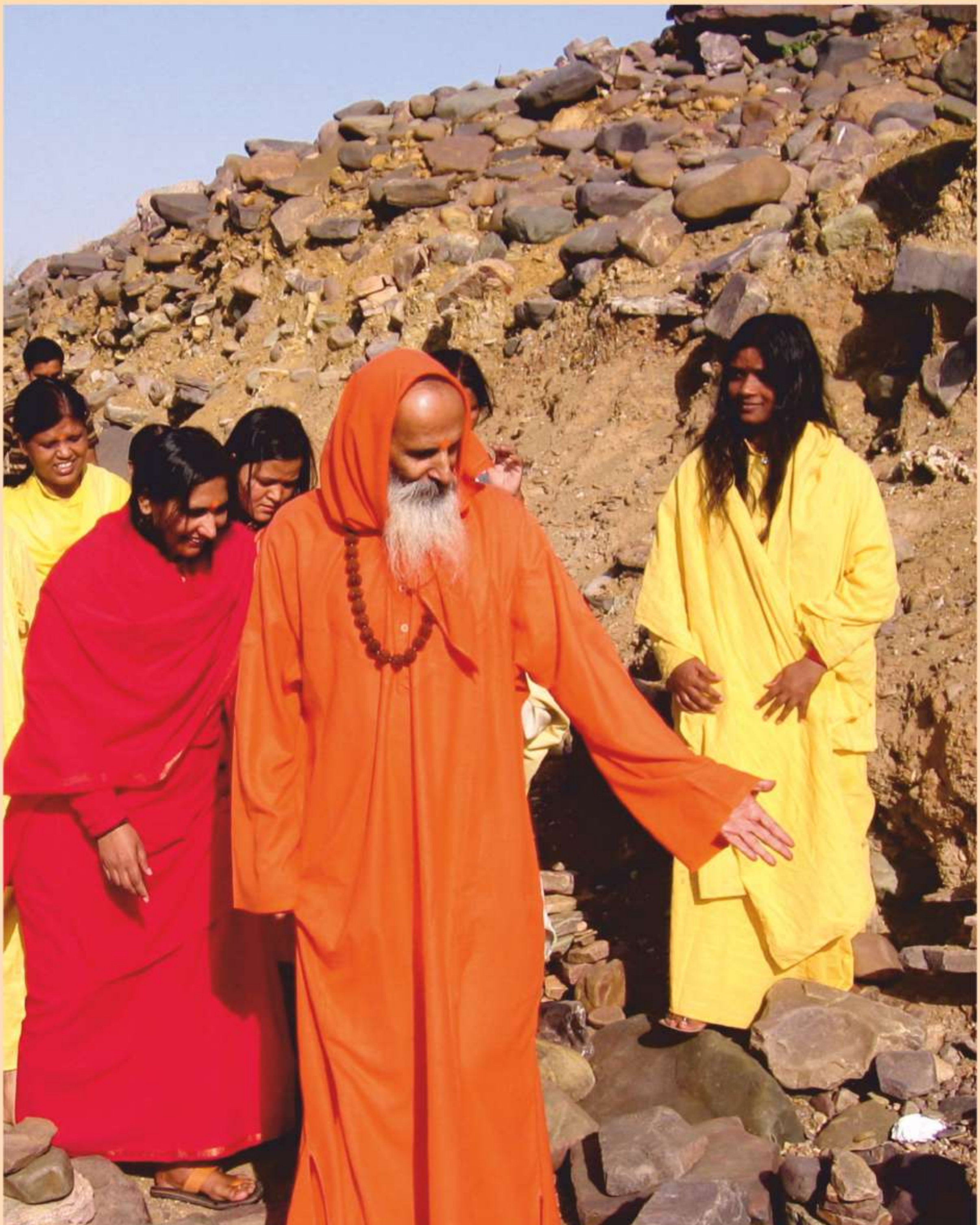

समाज सेवा का पथ कंटकाकीर्ण होता है। इसका प्रारंभ अपमानों, उपेक्षाओं, उपहासों अथवा असहयोगों से हो सकता है परन्तु जब सद्गुरु स्वयं इसके पथ प्रदर्शक बन जाएँ, तब सारा जगत आपके साथ खड़ा होता है। 'वात्सल्य सृष्टि' का सृजनारंभ भी ऐसी ही विषमताओं के साथ हुआ था परन्तु मेरे पूज्य सद्गुरुदेव श्री युगपुरुष जी भगवान ने मेरा पथ प्रशस्त किया। मैं उनकी अपार कृपा के समक्ष नतमस्तक हूँ। मैं आभारी हूँ उन सभी बंधु-भगिनियों की, जिन्होंने वात्सल्य ग्राम के पग-पग पर अपने स्नेहिल सहयोगों के हस्ताक्षर किये...

साध्वी ऋतंभरा

साधना और सेवा का संगम
वात्सल्य निर्झर
वर्ष 23, अंक 4, मई 2026

मुख्य संरक्षक
परम पूज्य महामण्डलेश्वर अनन्तश्री विभूषित
युगपुरुष स्वामी परमानन्द गिरि जी महाराज

संरक्षक
परम पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी

प्रधान सम्पादक
संजय गुप्ता

प्रकाशक
परमशक्ति पीठ द्वारा संजय गुप्ता

सम्पादकीय मण्डल
देवेन्द्र शुक्ल एवं स्वास्तिका

प्रधान कार्यालय
वात्सल्य प्रकाशन, परमशक्ति पीठ
लव–102, अग्रसेन आवास,
66, इन्द्रप्रस्थ विस्तार, दिल्ली –110092
दूरभाष : 011 22238751
मोबाईल सम्पर्क : 99588 85858
ई मेल : info@vatsalyagram.org
वेबसाइट : www.vatsalyagram.org

शाखा कार्यालय
वात्सल्य ग्राम
मथुरा–वृन्दावन मार्ग, पोस्ट–वात्सल्य ग्राम
वृन्दावन (उ.प्र.) 281003

प्रकाशक एवं सम्पादक संजय गुप्ता द्वारा
परमशक्ति पीठ के लिए
हरिओम त्यागी, ए.आर.पैकटेक प्रा.लि.,
आई–23, बेसमेंट, सेक्टर–9, नोएडा, उ.प्र. से मुद्रित एवं
परमशक्ति पीठ,
लव–103, 66, इन्द्रप्रस्थ विस्तार,
पटपड़गंज, दिल्ली से प्रकाशित

वात्सल्य निर्झर में प्रकाशित लेख एवं रचनाएँ उनके लेखकों के विचारों की अभिव्यक्ति हैं। अतः उनसे सम्बन्धित किसी भी विवाद के लिए लेखक अथवा रचनाकार ही उत्तरदायी रहेंगे।

वात्सल्य ग्राम विशेषांक

परमशक्ति पीठ

अन्तर्यात्रा

06 राष्ट्र जागरण
08 अग्निशिखा से वात्सल्य गंगा का प्रादुर्भाव
10 वात्सल्य ग्राम की स्थापना
12 वात्सल्य ग्राम के सेवा प्रकल्प
42 वात्सल्य ग्राम–पूज्या दीदी माँ जी की तप सिद्धि...
44 वात्सल्य ग्राम के विभिन्न अभियान
52 परमशक्ति पीठ के राष्ट्रव्यापी प्रकल्प
54 पूज्या दीदी माँ जी के सेवाकार्यों के सम्मान

गोस्वामी श्री तुलसीदास जी कृत
मानस मोती

फल भारत नमि बिटप सब रहे भूमि निअराइ।
पर उपकारी पुरुष जिमि नवहिं सुसंपति पाइ ॥४०॥

-अरण्यकाण्ड

फलों के बोझ से झुककर सारे वृक्ष पृथ्वी के पास आ लगे हैं, जैसे परोपकारी पुरुष बड़ी सम्पत्ति पाकर (विनय से) झुक जाते हैं।

अपनी बात...

-देवेन्द्र शुक्ल

वात्सल्य का अविरल प्रवाह हैं दीदी माँ। जैसे गंगा मैया का पुण्य प्रवाह छोटे से गौमुख से निकलकर, दुग्ध-धवल हिमशिखरों से अमृत बूँदों के रूप में झरते हुए न केवल मनुष्यों वरन जड़-जंगम सबको तृप्ति देता है वैसे ही दीदी माँ के वात्सल्य ने बिना किसी भेदभाव के मुरझाई हुई मनुष्यता को नव पल्लवों सा खिलाया है। महामानव के रूप में उनके जीवन को पारिभाषित करना शब्द सामर्थ्य से बाहर है।

लुधियाना के मण्डी दोराहा गाँव में 2 जनवरी 1964 को पिता श्री प्यारेलाल जी एवं माता श्रीमती कलावती जी के घर उनका जन्म हुआ। बचपन से ही उनके अन्तर्मन की धारा अध्यात्म सागर की ओर बह रही थी। जैसे एक छोटा सा झरना गंगा में मिलकर गंगा हो जाता है, वैसे ही सद्गुरुदेव अनन्तश्री विभूषित युगपुरुष स्वामी परमानन्द जी महाराज का सानिध्य प्राप्त कर नन्हीं बालिका 'निशा' की चेतना का आध्यात्मिक गंगा में संगम हुआ। गुरु परम्परा से नाम मिला 'साध्वी ऋतम्भरा।' वो समय जब स्त्रियों के लिए संन्यास दीक्षा सहज स्वीकार्य नहीं थी, युगपुरुष जी महाराज ने मातृशक्ति की महिमा से पगे हुए अतीत के भारत की गौरवशाली परम्परा को आगे बढ़ाकर एक साधारण बालिका के भीतर असाधारण व्यक्तित्व का सृजन किया।

धर्म और संस्कृति के रक्षणार्थ महान भारतवर्ष की प्राचीन गुरु-शिष्य परम्परा अपना सर्वस्व समर्पित करती चली आई है। युगपुरुष जी महाराज और उनकी परम शिष्या साध्वी ऋतम्भरा जी इसका वर्तमान उदाहरण हैं। 1980 के दशक का वह दौर जब हिन्दू जाति अपना स्वाभिमान खो रही थी, अपने सद्गुरुदेव की पावन प्रेरणा पाकर साध्वीजी ने भारत के हर गाँव, नगर और डगर पर हिन्दू जागरण की हुंकार भरी। मत, पंथ और जातियों की दीवारें ढहाकर उन्होंने हिन्दू समाज के बीच अभूतपूर्व एकता का सृजन किया। भारत की आत्मा प्रभु श्रीराम की अयोध्या स्थित जन्मभूमि के मुक्ति संघर्ष में उनका ओजस्वी योगदान आज भी करोड़ों भारतवासियों की स्मृतियों में जस का तस बना हुआ है।

अनजान राह पर निराश्रित पड़े एक नन्हें शिशु की करुण पुकार ने उनको भीतर कहीं गहरे तक आहत किया। नारी निकेतनों के भीतर कुण्ठित मातृशक्ति की बैचेनी और अपनी संतानों के द्वारा वृद्धाश्रमों की दीवारों में धकेल दी जाने वाली वृद्धा माताओं की असह्य वेदना ने उनके भीतर 'वात्सल्य ग्राम' की कल्पना को जन्म दिया। एक सच्चे संन्यासी का संकल्प अपने साथ सहयोग के हज़ारों हाथ लेकर सिद्धि के द्वार की ओर बढ़ता है। साध्वीजी की कल्पना को साकार रूप देने के लिए ऐसे ही हाथ उनकी शक्ति बने। योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण की लीलाभूमि वृन्दावन में उसी स्थान पर 'वात्सल्य ग्राम' का निर्माण हुआ, जहाँ वे अपना बाल रूप छोड़कर गए थे। अपनी ओजस्वी वाणी से सारे भारत में स्वाभिमान का जागरण करने वाली साध्वी दीदी ऋतम्भरा जी ने वात्सल्य की एक ऐसी अद्भुत सृष्टि का सृजन किया कि दुनिया कह उठी -'वाह दीदी माँ।'

देवकी की कोख से बाहर आते ही निराश्रित हो गए नवजातों को यशोदा की गोद प्रदान करना। जरूरतमन्द बहनों और माताओं को सुरक्षित आश्रय प्रदान करना। उनमें स्वावलंबन के लिए प्रशिक्षण केन्द्र का आरंभ करना। अभावग्रस्त परिवारों के बच्चों हेतु निःशुल्क विद्यालयों का संचालन आरंभ करवाना। धन के अभाव में अपनी आँखों के रोशनी खो रहे नेत्र रोगियों को निःशुल्क मोतियाबिन्द ऑपरेशन शिविरों के माध्यम से नवज्योति प्रदान करना। देश-विदेश में प्राकृतिक आपदाओं के चलते पीड़ितों के बीच जाकर उनके राहत एवं पुनर्वास का नेतृत्व स्वयं करना।

इन सब मानवीय कार्यों के लिए देश-दुनिया के लोग के समक्ष 'दीदी माँ' के प्रति कृतज्ञता के कोई शब्द नहीं होते। जहाँ से भी पीड़ित मानवता उन्हें पुकारती है, वे वहीं दौड़ पड़ती हैं। जैसे कोई अजानबाहु देव, हजारों हाथों से सबको सम्भालने वाला। जैसे कोई एक महानदी, जीव, जड़ और जंगम सबको तृप्त करने वाली। जैसे कोई बादल, बिना किसी की पात्रता देखे सब पर बरस पड़ने वाला।

'दीदी माँ' मानवसेवा का एक ऐसा महाग्रंथ हैं जिसके प्रत्येक पृष्ठ पर पीड़ित मानवता को उसके त्रास से उबारने वाली जाने कितनी कहानियाँ लिखी हुई हैं। उनकी संस्था 'परमशक्ति पीठ' के अन्तर्गत संचालित हो रहे वात्सल्य ग्राम के चौबीसवें वर्ष में प्रवेश करने पर उसके विभिन्न सेवाकार्यों से सजा हुआ वात्सल्य निर्झर का यह विशेषांक एक प्रयत्न है, दीदी माँ की वात्सल्य गाथा को जन-जन तक पहुँचाने का।

विद्यादायिनी माँ सरस्वती की असीम अनुकम्पा एवं पूज्य सद्गुरुदेव युगपुरुष अनन्तश्री विभूषित युगपुरुष महामण्डलेश्वर स्वामी परमानन्द गिरि जी महाराज की पावन कृपा से संपादित यह विशेषांक पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी की वात्सल्य यात्रा की चित्रमय यशोगाथा का वर्णन करते हुए उनके पावन श्रीचरणों में समर्पित है।

1990 के दशक का राष्ट्र जागरण

आज भारत षड्यंत्रों से घिरा है। आंतरिक और बाहरी षड्यंत्रों से भारत की सभ्यता, संस्कृति और भारत का भविष्य आज सबकुछ खतरे में है। जब धरा खतरे में हो, भारत की संस्कृति खतरे में हो, तब धरा के पुत्रों को मूक-बधिर बनकर तमाशा नहीं देखना चाहिए, बल्कि अपने कर्तव्यों और दायित्वों के साथ मैदान में खड़े हो जाना चाहिए। आज जिस तरह से अपनों के ही द्वारा इस देश के अंदर विघटन के बीज बोए जा रहे हों, तब स्थिति बड़ी चिंताजनक हो जाती है, जिसने सदैव विश्व को श्वसुधैव कुटुम्बकम्श का संदेश दिया हो, आज ऐसे भारत में उसकी अपनी परंपराएँ अपने ही घर में गाली खा रही हैं। भारत की पावन-पवित्र मान्यताएँ अपने घर में अपमानित हो रही हैं। जिस तरह देश के अंदर धर्म परिवर्तन के लिए धर्मांतरण का कार्य चल रहा है, जिस तरह हिंदुओं की संख्या को कम करने का षड्यंत्र चल रहा है, यह सबकुछ चुप रहकर देखने वाला तमाशा नहीं है, बल्कि ये जो सबकुछ हो रहा है, इसका विरोध करने के लिए हम सबको डटना है।

मुझे आश्चर्य नहीं होता है कि भारत का विघटन हो रहा है, ईसाई मिशनरियाँ हिंदुओं को ईसाई बना रही हैं, मुसलमान अनेक शादियाँ करके बहुत-बहुत संतानें पैदा कर रहे हैं। इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं। आश्चर्य की बात तो यह है कि हिंदू समाज अपने ऊपर जिन अन्यायों को होता देख रहा है, उनका विरोध करने के लिए अभी तक वह अपना सीना तानकर मैदान में डटा क्यों नहीं है ? जो विघटन हो रहा है, वह तो होगा ही। शत्रु विघटन करते हैं, शत्रु देश को तोड़ने का प्रयत्न करते हैं, पर ऐसी स्थिति में भारत की संतानों का क्या दायित्व है ? मुझे यह जानकर बड़ा आश्चर्य हुआ, ईसाई मिशनरियों के द्वारा भय पैदा किया जा रहा है। सिंहों के पुत्रों को गीदड़ों के द्वारा डराया जा रहा है। यह आश्चर्य की बात नहीं तो और क्या है ? आज आपको अपना पुरुषत्व और अपने पुरखों के आदर्श का स्मरण दिलाना चाहती हूँ मैं। यह समर्थ हिन्दू समाज आज निरीह क्यों है? आपके पुरखे, आपके पूर्वज कितने पराक्रमी थे। उनका स्मरण कीजिए आप।

हिन्दू जगजागरण का प्रतीक बन चुकीं साध्वी ऋतम्भरा जी की धर्मसभाओं में लाखों हिन्दुओं की भीड़ उमड़ती। उनकी तेजस्विता युवा वर्ग को प्रभावित करती और वह उनके विचारों से प्रेरित होकर उनका अनुसरण करता। वो जनसभाओं में उद्घोष करतीं कि 'लोकसभा बासंती चोला पहन के जिस दिन आएगी, गली-गली मेरे भारत की वृन्दावन कहलाएगी।' लोग इस पर विचार करते। जनमानस के इसी मंथन से राष्ट्रवादी राजनैतिक दल भारतीय जनता पार्टी को राष्ट्रव्यापी समर्थन का अमृत प्राप्त हुआ। आज हम जिस राजनैतिक परिदृश्य को भारत के राजनैतिक क्षितिज पर देखते हैं, उसके मूल में एक बड़ा योगदान दीदी ऋतम्भरा जी का भी रहा है।

सिंह गर्जना

विश्व शक्तियों ने सीमा पर, फिर से जाल बिछाया है
हथियारों का ओढ़ लबादा, गीदड़ फिर गुर्राया है।
हम डरते नहीं अणुबम्बों, विध्वंसक जलपोतों से
हम डरते हैं ताशकंद-शिमला जैसे समझौतों से।
सियार-भेड़ियों से डर सकतीं, सिंहों की संतान नहीं
भरतवंश के इस पानी की, है तुमको पहचान नहीं।

एटम बम बना करके तुम, फिर से मद में फूल गए
पैंसठ और इकहत्तर के युद्धों को शायद भूल गए।
याद करो अब्दुल हमीद ने पैटर्न टैंक जला डाला
हिंदुस्तानी नेटों ने अमरीकी जेट जला डाला।
याद करो गाजी का बेड़ा, झटके में ही डुबा दिया
ढाका के जनरल नियाजी को, दूध छठी का पिला दिया।

याद करो नब्बे हजार, उन बंदी पाक जवानों को
याद करो शिमला समझौता, इंदिरा के अहसानों को
अबकी जंग छिड़ी तो, निश्चित युद्ध विराम नहीं होगा
काश्मीर तो होगा, लेकिन पाकिस्तान नहीं होगा।
एटम बम चलाने की हिम्मत कौन दिखाएगा
इन्हें चलाने को बोलो क्या बाप तुम्हारा आएगा।

अबकी चिंता मत कर मियाँ, चेहरे का खोल बदल देंगे
इतिहास की तो हस्ती है क्या, पूरा भूगोल बदल देंगे।
धारा हर मोड़ बदल करके, लाहौर से गुजरेगी गंगा
इस्लामाबाद की छाती पर, फहराएगा भारत का झंडा।

रावलपिंडी और कराची तक, सबकुछ गर्त हो जाएगा
सिंध नदी के आर-पार, पूरा भारत हो जाएगा।
फिर सदियों तक जिन्ना जैसा शैतान नहीं होगा
काश्मीर तो होगा लेकिन पाकिस्तान नहीं होगा।

अग्निशिखा से वात्सल्य गंगा का प्रादुर्भाव

वर्ष 1992 में अयोध्या के बाबरी ढाँचा विध्वंस के बाद विधाता ने अपना कुछ और ही सृजन रच रखा था, जिसका माध्यम उन्होंने साध्वी ऋतम्भरा जी को बनाया। अपने कुछ सहयोगियों के साथ उन्होंने दिल्ली में समाजसेवा के उद्देश्य से 2 अप्रैल 1992 के दिन संस्था 'परमशक्ति पीठ' की स्थापना की।

साध्वी ऋतम्भरा जी अपने उत्तरप्रदेश प्रवास पर थीं और वहीं 2 सितम्बर 1993 को जालौन में एक सिद्ध सन्त ने एक निराश्रित नवजात को उनकी गोद में डालते हुए कहा कि -'धर्म और राष्ट्रजागरण के साथ अब इसे भी संभालो।' यह एक अप्रत्याशित घटना थी, जिसके लिए वे तैयार नहीं थीं। परन्तु अपने पूज्य गुरुदेव युगपुरुष अनन्तश्री विभूषित स्वामी परमानंद जी महाराज का पावन मार्गदर्शन प्राप्त कर वे उसे पटपड़गंज, दिल्ली स्थित दो कमरों वाले एक घर में ले आईं, जो संस्था 'परमशक्ति पीठ' का कार्यालय भी था। यही शुरुआत थी वात्सल्य अभियान की।

धीरे-धीरे ऐसे ही अनेक नवजात यहाँ लाए जाने लगे, जिन्हें उनकी जननी ने जाने किस विवशता में सड़कों पर असहाय अवस्था में छोड़ दिया। वात्सल्य की प्रथम यशोदा माँ श्रीमती अनुपम भाटी ने बिना किसी संबंध के पहले बच्चे को अपना स्तनपान तक कराया। फिर पूज्या साध्वी साक्षी चेतना जी के मार्गदर्शन में शोभा जी, जयश्री जी (वर्तमान में साध्वी शिरोमणि जी), सुमन जी और सीता जी जैसी समर्पित बहनों ने स्वयं को 'यशोदा माताओं' के रूप में स्वयं को जीवन भर के लिए वात्सल्य के इस अभियान में समर्पित किया। दीदी ऋतम्भरा जी के गुरुभाई दिल्ली निवासी श्री संजय गुप्ता ने भी चार्टर्ड एकाउंटेंट जैसे लब्ध व्यवसाय को छोड़कर आजीवन स्वयं को इस प्रकल्प के लिए समर्पित किया।

सारे देश को क्रान्तिकारी स्वरों से झंकृत करने वाली साध्वी ऋतम्भरा जी के हृदय से वात्सल्य की गंगा बह निकली और वे अपने सहज स्वभाववश 'दीदी माँ' के रूप में देश-दुनिया के सामने आईं।

वात्सल्य मंदिर, ज्वाला नगर, दिल्ली

दिल्ली स्थित पटपड़गंज के उस छोटे से फ्लेट में निराश्रित नवजातों का आना निरन्तर था और उनकी बढ़ती संख्या की तुलना में यह घर छोटा पड़ने लगा था। इसी बीच पूज्य गुरुदेव श्री युगपुरुष जी महाराज की पावन प्रेरणा से दिल्ली के शाहदरा स्थित ज्वाला नगर में किसी दानदाता ने एक भूखण्ड दान दिया और इसी पर वर्ष 1998 में नवजातों के आश्रय हेतु निर्मित हुआ 'वात्सल्य मंदिर।' यहाँ प्रख्यात चिंतक और लेखक श्री भानुप्रताप जी शुक्ल का स्नेह भी बच्चों को मिला।

वृन्दावन में वात्सल्य ग्राम की स्थापना

परमशक्ति पीठ की स्थापना के समय श्री संजय भैयाजी ने उत्तरप्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री कल्याणसिंह जी को एक प्रस्ताव दिया था कि हमें परमशक्ति पीठ के मानवसेवी कार्यों के लिए मथुरा-वृंदावन मार्ग पर एक भूखण्ड प्रदान किया जाये। इस पर प्रशासकीय सहमति भी बन गई थी परन्तु इसी बीच 6 दिसंबर 1992 को अयोध्या में बाबरी ढाँचा ध्वंस की घटना घटी और उत्तरप्रदेश की कल्याणसिंह सरकार नहीं रही। इसके बाद बदले घटनाक्रम में राजनीतिक बदलाव हुए और परमशक्ति पीठ के लिए उस भूमि का आवंटन भी रुक गया।

देश के प्रख्यात लेखक, चिंतक, विचारक और राष्ट्रवादी समाचार पत्र पांचजन्य के संस्थापक संपादक रहे श्री भानुप्रताप जी शुक्ल पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी को अपनी माता के रूप में देखते थे। वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन के भूमि आवंटन को लेकर उन्होंने विशेष प्रयत्न किये। राजनीतिक परिवर्तनों के उस दौर में उत्तर प्रदेश में कुछ दिनों के लिए श्री रामप्रकाश जी गुप्त के मुख्यमंत्रित्व में भा.ज.पा. सरकार का गठन हुआ। भानु भैया ने उनसे कहा कि मेरी माँ वृंदावन की उस पावन भूमि पर वात्सल्य की एक सुंदर सृष्टि बसाना चाहती हैं। आप अपने मंत्रिमण्डल में इस आशय का एक प्रस्ताव पारित कर इस योजना के लिए इस भूमि के आवंटन पर लगी रोक को तत्काल निरस्त करें ताकि इसपर अगला कार्य आरंभ किया जा सके।

भानु भैया ने इस कार्य की बागडोर मथुरा के भारतीय जनता पार्टी नेता श्री रविकान्त गर्ग के हाथों में सौंपी। उन्होंने इस सारे कार्य को सम्पन्न करके वात्सल्य ग्राम के पक्ष में भूमि का आवंटन प्राप्त किया। यशोदा-कृष्ण की भावभूमि वृन्दावन पर 8 मई 2003 को वात्सल्य ग्राम लोकार्पण के साथ ही वात्सल्य का आलोक चारों तरफ फैलना आरंभ हो गया।

वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन के भूमि आवंटन में प्रमुख भूमिका निभाने वाले श्री भानुप्रताप जी शुक्ल एवं उत्तरप्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री रामप्रकाश जी गुप्त पूज्य गुरुदेव युगपुरुष अनन्तश्री विभूषित स्वामी परमानंद जी महाराज से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए।

वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन में भूमि पूजन एवं लोकार्पण के दृश्य।

वात्सल्य ग्राम/परमशक्ति पीठ के सेवा प्रकल्प

पालना घर

'इस संसार में आने वाला प्रत्येक नवजात इस धरती के लिए ईश्वर का एक उपहार है और उसे संभाला ही जाना चाहिए', पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के इसी विचार के साथ वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन के स्वागत कक्ष में एक पालना रखा गया। उद्देश्य था कि जो लोग भी किसी कारण से अपनी नवजात संतान को सड़कों पर असहाय अवस्था में छोड़ जाते हैं, वो उन्हें इस पालने में छोड़ जाएँ। उनकी पहचान भी सार्वजनिक नहीं की जाएगी और उस नन्हें नवजात का अनमोल जीवन भी बच जाएगा। इस अपील का व्यापक प्रभाव हुआ और लोगों ने अपने उन नवजातों को यहाँ छोड़ना शुरू किया, जिनके जन्म को वे अपनी पहचान नहीं देना चाहते थे। जो नवजात पहले कंटीली झाड़ियों में, चीटियों के झुंड में, बरसाती पनालों में या फिर भीषण गर्मी में सड़कों पर पड़ें होते थे, अब वात्सल्य परिवार का अंग बनने लगे।

शिशु मंगल

'नवजात बच्चे पालना घर से सीधे गोकुलम् आकर पूज्या दीदी माँ जी गोद का आश्रय पाते। कुछ घण्टों का निराश्रय पल भर में ही परम आश्रय को पा जाता। निश्चित रूप से यहाँ आने वाला प्रत्येक शिशु किसी विशेष उद्देश्य से ही जन्मा होगा। दीदी माँ अपार वात्सल्य भाव से प्रत्येक बच्चे को गोकुलम् की किसी न किसी यशोदा माँ की गोद में डालतीं। यहाँ उसे एक घर के साथ ही माँ, मौसी और नानी का प्यार-दुलार मिलता। जो बच्चे किसी जन्मजात रोग के कारण उसकी जननी द्वारा त्याग दिये गए थे, उन्हें तत्काल ही दिल्ली के पुष्पांजलि क्रॉसले हॉस्पिटल में भेजा जाता। जिसके संस्थापक डॉ.विनय अग्रवाल ने संकल्प ले रखा था कि वे वात्सल्य ग्राम से आने वाले ऐसे किसी भी नवजात की निःशुल्क चिकित्सा व्यवस्था उसके ठीक होने तक करेंगे। व्यावसायिक चिकित्सा जगत के बीच यह एक 'भीष्म संकल्प' था, जिसके लिए डॉ.अग्रवाल जी आभार केवल शब्दों में नहीं व्यक्त किया जा सकता। इधर वात्सल्य ग्राम की प्रत्येक आवासीय इकाई में दस बच्चों के साथ उनकी माँ, मौसी और नानी का परिवार आनंदपूर्वक रहता। बच्चे थोड़े बड़े होते तो उन्हें परिसर में ही स्थित 'शिशु मंगल' संस्कार केन्द्र में भेजा जाता, जहाँ वे स्कूलों के वातावरण से परिचित होना सीखते।

कहानियाँ नन्हें नवजातों की....

(एक)

गंभीर हृदय रोग से जूझते नवजात बच्चे को कोई माँ अपने दिल पर पत्थर रखकर वात्सल्य ग्राम के पालना घर में छोड़ गई थी। उसके मेडिकल टेस्ट में पता चला कि उसकी बीमारी के निदान में भारी खर्च और लंबा समय लगेगा। देखने वालों को लगा कि यह सब आखिर कैसे होगा, लेकिन दीदी माँ की वात्सल्य धारा सारे अभावों, संकटों को जैसे बहा ले जाती है। उन्होंने संकल्प किया कि जैसे भी हो सकेगा आधुनिक तकनीक की सहायता से उसे बचाने की हरसंभव कोशिश की जाएगी। उनका यही संकल्प उस नन्हें बच्चे की एक ऐसी शक्ति बना रहा, जिसके बल पर वह अपने रोग की तमाम चुनौतियों का सामना करता हुआ आधुनिक चिकित्सा की मदद से धीरे-धीरे स्वस्थ जीवन की राह पर बढ़ गया। वो नवजात अपने जन्म से ही 'रिवर्स पम्पिंग' नामक एक गंभीर हृदय रोग से पीड़ित है, जिसके कारण उसके हृदय में चेंबर की कार्यप्रणाली किसी सामान्य हृदय की अपेक्षा एकदम विपरीत थी। जिस चेंबर द्वारा ऑक्सीज़न की आपूर्ति फेफड़ों को होनी चाहिए वह उसके बजाय शरीर के अन्य भागों में चली जाती थी। संभवतः इलाज ना करा पाने की विवशता के चलते इसकी माँ इसे जन्म देते ही वर्ष 2014 में पूज्या दीदी माँ जी की शरण में छोड़कर चली गई थी। इस रोग से उसे मुक्ति दिलाने के लिए उसी समय ओखला, दिल्ली के 'फोर्टिस एस्कॉर्ट हॉस्पिटल' में उसकी की सर्जरी की गई। ऑपरेशन करने वाले डॉ. राजेश शर्मा के अनुसार बच्चे के दिल में चेंबर प्रक्रिया की इस जटिलतम विसंगति को समझकर उसे ठीक करने के

प्रयासों में उनकी टीम ने गहरा अनुसंधान किया और पाया कि इस ऑपरेशन के बाद भी 21 वर्ष की आयु तक रूद्राक्ष के कई और ऑपरेशन होने के बाद ही वह ठीक हो सकेगा। पहला ऑपरेशन वर्ष 2014 में हुआ और लगातार दस दिनों तक चली गहन चिकित्सकीय निगरानी के बाद वह वात्सल्य ग्राम, वृंदावन लौटा। मई 2016 में नोएडा के जे.पी.हॉस्पिटल में उसकी दूसरी 'ओपन हार्ट' सर्जरी हुई। लगातार ग्यारह घण्टों तक चला यह ऑपरेशन अत्याधिक जटिल था। चूँकि इसमें दिल को शरीर से अलग कर उसके कार्य मशीन को सौंपना होते हैं, इसलिए मरीज के प्राणों पर संकट भी बना रहता है। इस लंबे ऑपरेशन से जूझने वाले उस बालक को 'पोस्ट ऑपरेशन केयर' के अन्तर्गत अगले पाँच दिनों तक 'हार्ट-लंग मशीन' पर रखा गया, क्योंकि गहरी थकान के कारण उसका हृदय ठीक से काम नहीं कर पा रहा था। ऑपरेशन के दौरान अत्याधिक रक्तस्राव होने से उसे 14 यूनिट रक्त भी दिया गया। सुखद संयोग यह रहा कि वेन्टीलेटर हटाए जाने के बाद उसके हृदय ने अपना काम करना शुरू कर दिया। आज वह बालक समविद गुरुकुलम् स्कूल में कक्षा पाँचवी का छात्र होकर एक स्वस्थ और प्रसन्न जीवन जी रहा है।

(दो)

कुछ वर्ष पूर्व 2 जनवरी की भीषण ठण्ड में ठिठुरती रात्रि में वात्सल्य ग्राम के पालना घर में कोई अपने एक नवजात बालक को रखकर चला गया। सूचना मिलने पर वहाँ पहुँचे लोग उसे देखकर दंग रह गए। एक सुन्दर से बालक को बहुत सलीके से ऊनी कपड़ों में लपेटकर कोई वहाँ रख गया था। तमाम सामाजिक कुरीतियों के चलते हमारे देश में एक अरसे से नवजात कन्या को मार दिए जाने अथवा सड़कों पर मरने के लिए छोड़ जाने की पाशविक घटनाएँ तो घटती आ रही हैं, लेकिन इतने सुन्दर से बालक को कोई कैसे छोड़ सकता है! यह एक बड़ा अचरज था।

अगले दिन एक निश्चित प्रक्रिया के अनुसार गाजियाबाद के 'पुष्पांजलि क्रॉसले हॉस्पिटल' में उस बालक की चिकित्सकीय जाँच में एक गंभीर हृदय रोग सामने आया जिसके इलाज में लाखों रूपयों का खर्च अनुमानित था। संभवतः अपनी बहुत कमजोर आर्थिक हालत के चलते ही किसी माँ ने अपने कलेजे पर पत्थर रखकर उसे वात्सल्य ग्राम के पालना घर में छोड़ा होगा ताकि उसकी जिंदगी बच सके। हॉस्पिटल की मेडिकल टीम के अथक प्रयासों के बीच उस नन्हें बच्चे का जीवन दीप निरन्तर जलता रहा। जिसके बचने की भी संभावनाएं क्षीण थीं, दीदी माँ जी की वात्सल्यमयी गोद ने उसमें नवजीवन फूँक दिया। आज वह हँसता-खेलता बड़ा हो रहा है।

(तीन)

वात्सल्य ग्राम, वृंदावन के 'पालना घर' और तत्कालीन 'पुष्पांजलि क्रॉसले हॉस्पिटल' के सेवाभावी चिकित्सकों ने बड़ी खामोशी के साथ अपने अहर्निश प्रयत्नों के बीच ऐसे अनेकों बच्चों के जीवन बचा लिए, जो मौत के मुहाने तक पहुँच चुके थे। ये बच्ची भी उन्हीं में से एक थी। वात्सल्य मन्दिर, ज्वाला नगर, दिल्ली की श्रीमती नीरज गोयल अपनी यादों में जाकर बताती हैं कि -'पुष्पांजलि हॉस्पिटल की गहन चिकित्सा इकाई में जीवन रक्षक प्रणाली पर जीवन-मृत्यु से संघर्ष करती नन्हीं सी उस बच्ची के वो बीस दिन भुलाए नहीं भूलते।' नवम्बर 2013 में वात्सल्य परिवार की इस नन्हीं सदस्या को साँस लेने की तकलीफ के बाद हुए उसके चिकित्सकीय परीक्षण में उसे न्यूमोनिया रोग से ग्रस्त पाया गया जो कि गंभीर स्थिति में था। फेफड़ों के संक्रमण के बाद उसका एक ऑपरेशन भी किया गया। जिसके बाद बीस दिनों तक वो वेंटीलेटर पर 'कोमा' जैसी स्थिति में थी।

एक अच्छी-खासी और हँसती-खेलती नन्हीं बच्ची यूँ अचानक गहरी बेहोशी में चली जाएगी, इसका अंदाजा किसी को भी नहीं था। हर दिन, हर पल सब उसकी आँखें खुलने की प्रतीक्षा करते लेकिन उसके शरीर में कोई हरकत नहीं होती थी, सिवाय उसकी मन्द गति से चल रही साँसों के। हॉस्पिटल की पूरी मेडिकल टीम सारी संभावनाओं के दृष्टिगत उसके इलाज में जुटी हुई थी। सब लोग परमेश्वर से प्रार्थना करते, दीदी माँ जी से उसके लिए आशीर्वाद माँगते। ऐलोपैथी के साथ ही उसे होम्योपैथिक दवाएँ भी दी गईं। उसका जीवन बचाने के सम्मिलित प्रयास, जिनमें दवा और प्रार्थना दोनों ही शामिल थे, अन्ततः सफल हुए। वात्सल्य परिवार खुशी से झूम उठे जब उस बच्ची ने अपनी नन्हीं आँखे खोलकर फिर से दुनिया को देखा।

(चार)

वर्ष 2014 की गर्मियों के दिन। वात्सल्य ग्राम, वृंदावन के कार्यालय में सूचना मिली कि एक दम्पत्ति संस्था के प्रशासकीय विभाग से संपर्क करना चाहते हैं और उनके साथ एक नन्हीं नवजात बच्ची भी है। आमतौर पर

पहले स्वागत कक्ष और कार्यालय में ही आते हैं, तो हमें लगा कि वह एक सामान्य शिष्टाचार भेंट के लिए इच्छुक होंगे। उन्हें भीतर बुलाया गया। कक्ष में प्रवेश करते हुए वे दोनों बुझे-बुझे से दिखे। उन्होंने बताया कि वे एक किसान परिवार से हैं। आगे पूछने पर उस युवक की पत्नी ने रोते हुए कहा कि -'हम यहाँ अपनी

बताया कि -'मुझे इसके पहले भी एक बेटी है, जिसके जन्म के समय मेरे ससुराल के लोगों ने मुझे काफी ताने दिए थे। वे बेटा चाहते थे और मेरा बेटी को जन्म देना उनके लिए कष्टकारी था। ऐसा लगा ही नहीं कि मेरे पति को छोड़कर और कोई खुश था, उसके जन्म पर। उसके बाद जब मैं फिर से गर्भवती

नन्हीं नवजात बच्ची को छोड़ने के लिए आए हैं।' हमें यह जानकर आश्चर्य हुआ कि मध्यमवर्गीय किसान परिवार के उस युवक की आर्थिक स्थिति इतनी भी खराब नहीं थी कि वह उस बच्ची को न पाल सके। जिज्ञासा प्रकट करने पर उस महिला ने विस्तारपूर्वक

हुई तो पुत्र जन्म की चाह लिए, मेरे ससुराल वालों ने मुझ पर भ्रूण के लिंग परीक्षण का दबाव बनाया। यह जानते हुए भी कि भ्रूण का लिंग परीक्षण कराना दण्डनीय अपराध है, मैंने अपने ससुर के दबाव में जब यह परीक्षण करवाया तो पता चला कि मेरे गर्भ

के लिए बाध्य करने की कोशिशें शुरू हो गईं। लेकिन मैं अपने इस निर्णय पर अडिग थी कि मैं किसी भी स्थिति में अपने गर्भस्थ भ्रूण की हत्या नहीं होने दूंगी। मेरे परिवार द्वारा उस कन्या भ्रूण को समाप्त करने की तमाम कोशिशों के बीच भी मैंने उस दूसरी कन्या को जन्म दिया। जिन विरोधों के बीच मैंने उसे जन्म दिया था उनके चलते उसे पालना इतना कठिन हो चला, जिसकी मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी। मुझे उसे स्तनपान कराने तक से रोकने की कोशिशें हुईं। वह भूखी-प्यासी नवजात बच्ची बिलख-बिलखकर रोती और मुझे किसी ऐसे काम में उलझा दिया जाता, जिसके कारण में उसके पास तक पहुँच ही न सकूँ।

पाँच दिनों की वह बच्ची कमजोर तो पहले से ही थी क्योंकि मेरी गर्भावस्था के दौरान मुझे पौष्टिक आहार मिलना तो दूर, सामान्य भोजन भी ठीक से नहीं दिया गया। पूरी कोशिशें इस बात को ध्यान में रखकर की गईं कि कैसे भी वह बच्ची मेरे गर्भ में दम तोड़ दे। लेकिन मेरी इच्छा शक्ति के कारण वह जन्मी। दस-बारह दिनों के बाद जब उसे बुखार आया, तब मुझे उसे डॉक्टर के पास ले जाने तक से रोक दिया गया। अब मुझे यह लगने लगा था कि मेरे ससुराल वाले इस बच्ची की जान लेकर ही रहेंगे। मैंने इस दिशा में सोचना शुरू किया कि भले ही यह बच्ची मेरे पास न रहे, लेकिन इसका जीवित रहना बहुत जरूरी है।

इसी सोच-विचार के बीच मुझे ख्याल आया कि दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी का एक वात्सल्य ग्राम है वृंदावन में। क्यों न इस बच्ची को उनकी शरण में छोड़ आया जाए। कितने ही बच्चों को वो पाल रही हैं, तो उनके साथ ये भी पल जाएगी। कम से कम इसकी जान तो बचेगी। यही विचार करके आज हम दोनों पति-पत्नी चुपचाप घर से भागकर यहाँ आ गए हैं और इस बच्ची को वात्सल्य ग्राम में छोड़कर जाना चाहते हैं। इस घटना का वर्णन करते हुए कलम उस माँ के दर्द को लिख पाने में असमर्थ थी, जिसने उस माँ को अन्तिम बार अपनी लाडली बेटी को स्तनपान कराते हुए देखा था। बच्ची को पाल पाने की क्षमता होने के बावजूद भी उसे अपने से अलग करते हुए उस माँ के फटते कलेजे की धमक वहाँ मौजूद सभी लोगों के दिलों को हिला रही थी। वह बार-बार उस बच्ची को गले से लगाती। बुखार से तप रही बच्ची को हमेशा के लिए अपने से अलग करते समय उस माँ की छटपटाहट को शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। इस दृश्य के साक्षी लोग उस माँ की संकल्प शक्ति के आगे नतमस्तक थे, जिसने जाने कितने दबावों के बावजूद भी न केवल उस बच्ची को जन्म दिया बल्कि उसकी जिंदगी को बचाने के लिए अनेक संघर्षों के बीच वह वात्सल्य ग्राम तक जा पहुँची थी। वात्सल्य परिवार एक विवश माँ के उस संकल्प का आभारी था, जो कहीं न कहीं दीदी माँ जी के 'बेटी बचाओ आंदोलन' का एक हिस्सा बनने जा रहा था। उस माँ का दर्द देखकर सबकी आँखें भरी हुई थीं। वात्सल्य ग्राम ने पहली बार ये दृश्य देखा था जब कोई माँ वात्सल्य के पालने में अपनी ममता को सबके सामने रोते-बिलखते हुए छोड़कर जा रही हो।

रह-रहकर मन-मस्तिष्कों में यह विचार उठता रहा कि कितना निष्ठुर होता है मनुष्य! देवी जैसी आभा लिए उस सुंदर, सुकोमल बच्ची को देखकर हम सब लोगों के दिल दहल उठे कि कैसे कोई व्यक्ति अपनी इस नवजात पोती को मार डालने पर आमादा हो सकता है! आम तौर पर इस प्रकार के बच्चों को लोग वात्सल्य ग्राम के पालना घर में गोपनीय रूप से छोड़ जाते हैं लेकिन यह मामला अलग तरह का था, जिसमें बच्ची के माता-पिता स्वयं प्रस्तुत होकर अपनी विवशता के साथ बच्ची को सौंपना चाहते थे इसलिए इस संबंध में उनकी लिखित सहमति के साथ उस बच्ची को वात्सल्य ग्राम ने स्वीकार कर लिया। इतने वर्षों के बाद आज वह बच्ची पूरे वात्सल्य परिवार में अन्य बच्चों के समान ही सबकी लाडली है। वह अपनी प्रतिभा के बल पर समग्र विकास के पथ पर तेजी से अग्रसर है।

और भी जाने कितनी ऐसी कहानियाँ हैं, जो ये सोचने पर विवश करती हैं कि यदि दीदी माँ का वात्सल्य ऐसे असहाय बच्चों को न मिला होता तो वे आज जाने किस हाल में होते।

गोकुलम्

जैसे समाज में कोई भी सामान्य परिवार एक ऐसे घर में रहता है, जो सर्वसुविधायुक्त हो, वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन के गोकुलम् आवासीय संकुल में ऐसे ही घर बनाए गये। बैठक कक्ष, शयन कक्ष, अध्ययन कक्ष, पूजा घर, रसोईघर और सुलभ व्यवस्थाओं के साथ ये घर वात्सल्य परिवारों को सुखद एवं सुविधापूर्ण आवास प्रदान करते हैं। गोकुलम् परिसर चारों ओर एक सुरक्षा दीवार से घिरा हुआ है, जिसके मध्य में बच्चों की खेल गतिविधियों हेतु एक विशाल गोलाकार मैदान है। इसके एक ओर भारतमाता की सुन्दर प्रतिमा स्थापित की गई है।

गोकुलम् की प्रत्येक सर्वसुविधायुक्त आवासीय इकाई में माँ, मौसी और नानी के साथ पाँच बेटियों और दो बेटों का 'वात्सल्य परिवार' सुसंस्कारित वातावरण में निवास करता है। इस परिसर में सारे सनातनी पर्व बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाये जाते हैं। नन्हें बच्चों की प्यारी दीदी माँ सबके साथ यहाँ रहकर सबको अपना वात्सल्य बाँटती हैं।

संविद गुरुकुलम् गर्ल्स सैनिक स्कूल

वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन स्थित 'संविद गुरुकुलम् गर्ल्स सैनिक स्कूल' में अध्ययनरत् विद्यार्थी सुयोग्य शिक्षक-शिक्षिकाओं के मार्गदर्शन में स्मार्ट क्लासेस एवं अत्याधुनिक प्रयोगशालाओं के साथ योग, खेलकूद एवं अन्य बौद्धिक गतिविधियों के माध्यम से अपने स्वर्णिम भविष्य की ओर अग्रसर हैं। यह भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय के आधीन संचालित 'सैनिक स्कूल सोसायटी' द्वारा मान्यता प्राप्त बेटियों का पहला सैनिक स्कूल है। यहाँ नियमित अकादमिक शिक्षा के साथ ही छात्राओं को सैन्य प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है, जो उनके निजी जीवन में अनुशासन लाने के साथ ही भविष्य के लिए सैन्य गतिविधियों से प्रशिक्षित नागरिक भी तैयार करता है।

1 जनवरी 2024 को संविद गुरुकुलम् गर्ल्स सैनिक स्कूल का शुभारंभ करते हुए भारत के रक्षामंत्री श्री राजनाथसिंह जी एवं उ.प्र. के मुख्यमंत्री महंत श्री योगी आदित्यनाथ जी

TURE
HEAD

माँ कलावती पालयम्

संविद गुरुकुलम् गर्ल्स सैनिक स्कूल में अध्ययनरत् बालिकाओं के सुरक्षित एवं सर्वसुविधायुक्त निवास हेतु 'माँ कलावती पालयम्' गर्ल्स होस्टल परिसर में ही संचालित किया जाता है। यहाँ इच्छुक छात्राओं को प्रवेश दिया जाता है। भवन में स्वच्छ वायु एवं प्रकाश से संचारित कमरे एवं अत्याधुनिक भोजनशाला छात्राओं को अपने घर जैसा आभास कराते हैं। पढ़ाई एवं आराम हेतु व्यवस्थित फर्नीचर तथा महिला सुरक्षाकर्मी एवं अन्य स्टाफ इस सम्पूर्ण परिसर में निवासरत् छात्राओं को सुरक्षित रखते हैं। भवन में एक विशाल सभागार भी निर्मित किया गया है। यह परिसर संविद गुरुकुलम् गर्ल्स सैनिक स्कूल से मात्र 100 मीटर की दूरी पर स्थित होने से छात्राओं को यहाँ से वहाँ जाने और आने में कोई असुविधा नहीं होती।

वात्सल्य दिवस
2017

SAMVID GURUKULAM
SR. SEC. SCHOOL

कृष्णा ब्रम्हरतन विद्या मन्दिर

बात उन दिनों की है, जब वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन के प्रथम चरण में विभिन्न निर्माण कार्यों का प्रारम्भ हो रहा था। इसमें लगे कई मजदूर अपने परिवारों के साथ यहाँ काम करने आए थे। पति और पत्नी के साथ इन परिवारों में नन्हें बच्चे भी होते थे। मजदूर युगल दिन भर काम करते और उनके ये बच्चे यहाँ-वहाँ दौड़ते फिरते। उनकी स्कूली शिक्षा के बारे में तो वो सोच भी नहीं सकते थे क्योंकि दो समय के भोजन की जुगाड़ के अतिरिक्त उनके पास इतना धन नहीं था कि वो अपने बच्चों को किसी स्कूल में भेज सकें।

एक दिन पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी किसी निर्माण कार्य को देखने आईं और उनकी दृष्टि इन्हीं बच्चों पर पड़ी। उन्होंने मजदूरों से पूछा कि क्या ये स्कूल नहीं जाते। उत्तर में आर्थिक अभाव की समस्या सामने आया और यहीं से दीदी माँ जी के मन-मस्तिष्क में मंथन आरंभ हुआ कि इन बच्चों की प्राथमिक शिक्षा के लिए क्या किया जा सकता है।

दीदी माँ जी के निर्देश पर वात्सल्य परिवार की कुछ बहनों ने इन्हें वृक्ष की छाया में अक्षरज्ञान कराना प्रारंभ किया। उद्देश्य था कि बिना किसी फीस के इन बच्चों को स्कूली शिक्षा प्रदान की जाए। बस यहीं से 'कृष्णा ब्रम्हरतन विद्या मंदिर' का अंकुरण हुआ। परमशक्ति पीठ के अमेरिका निवासी सहयोगी श्री ब्रम्हरतन जी अग्रवाल एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती कृष्णा जी ने दीदी माँ जी की इच्छा जानकर इस विद्यालय के निर्माण में बड़ा सहयोग दिया। वृक्षों की छाया में पढ़ने वाले बच्चे कुछ समय बाद नूतन स्कूल भवन में आकर शिक्षा ग्रहण करने लगे।

आज 'कृष्णा ब्रह्मरतन विद्या मन्दिर' अपनी संपूर्ण क्षमता के साथ आर्थिक अभावग्रस्त परिवारों के बच्चों हेतु संचालित है, जिनके लिए लेखन-पठन सामग्री, यूनिफार्म तथा मध्यान्ह भोजन की व्यवस्था परमशक्ति पीठ की ओर से की जाती है। यहाँ अध्ययन कर चुके कई बच्चे आज महाविद्यालयीन शिक्षा ग्रहण कर अपने उज्ज्वल भविष्य की ओर बढ़ रहे हैं।

KBRVM
NNUAL
ESULT
DAY
24-25
विद्या मन्दिर

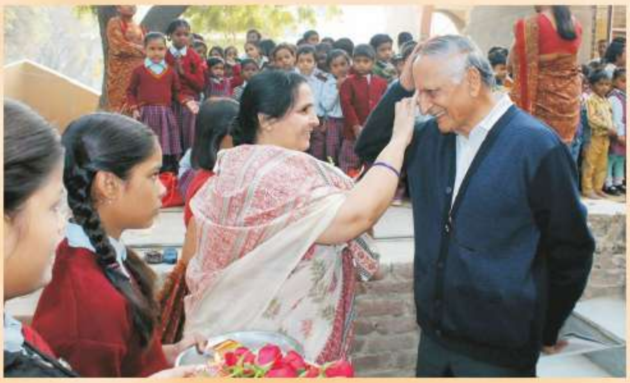

संविद एक्सपर्ट स्कूल

आज के इस दौर में रोजगार का स्रोत केवल अकादमिक शिक्षा पर ही निर्भर नहीं रह गया है। व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से ऐसे अनेक प्रशिक्षण समाज के बीच आ गए हैं जिन्हें प्राप्त करके अपनी प्रतिभा के साथ हमारे देश की युवा शक्ति रोजगार के नये अवसर प्राप्त कर सकती है। रोजगार की इस बदलती हुई स्थिति को देखते हुए पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी की पावन प्रेरणा से वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन में 'संविद एक्सपर्ट स्कूल' का संचालन किया जा रहा है। यहाँ कम्प्यूटर प्रशिक्षण, ब्यूटी पॉर्लर प्रशिक्षण, सिलाई एवं कढ़ाई प्रशिक्षण, अचार, पापड़ और बड़ी जैसे खाद्य पदार्थों के साथ ही कलात्मक दीपकों, मोमबत्तियों तथा सजावटी वस्तुओं के निर्माण का व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। इस स्कूल के माध्यम से अब तक सैकड़ों बेटियों को ये प्रशिक्षण प्रदान किये जा चुके हैं जिनके माध्यम से वे स्व रोजगार प्राप्त कर रही हैं। वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन स्थित संविद एक्सपर्ट स्कूल के काउंटर से प्रशिक्षणार्थी बहनों के द्वारा निर्मित उत्पाद खरीदे भी जा सकते हैं।

सांस्कृतिक महातीर्थ - श्री सर्वमंगला पीठम्

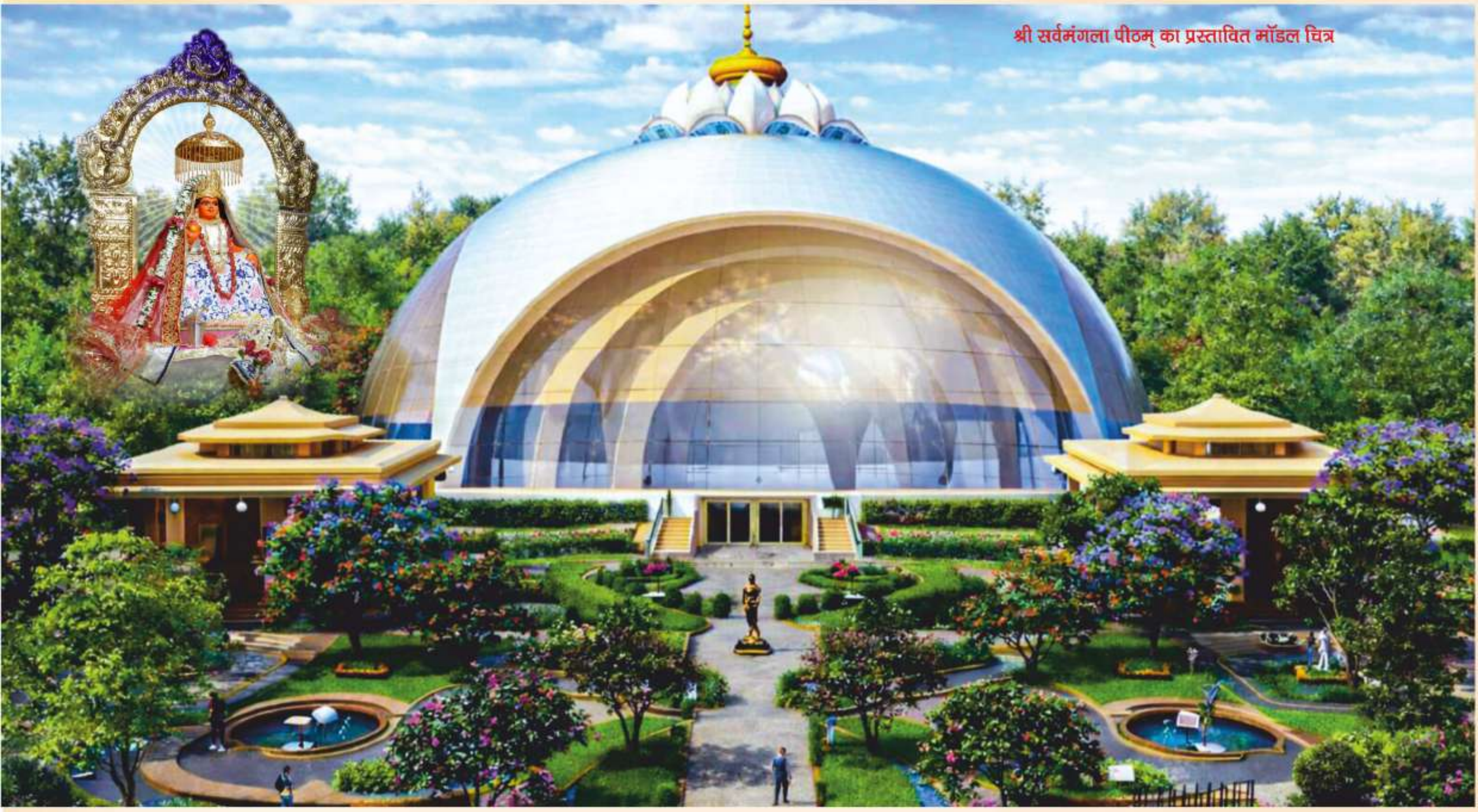
श्री सर्वमंगला पीठम् का प्रस्तावित मॉडल चित्र

- लगभग डेढ़ लाख वर्गफीट क्षेत्रफल में विस्तारित एवं एक सौ चौदह फीट की ऊँचाई लिए हुए सांस्कृतिक महातीर्थ श्री सर्वमंगला पीठम् शिल्पकला की दृष्टि से अद्वितीय होगा।
- रज, तम और सत्व गुणों को प्रदर्शित करती इसकी तीन पारदर्शी छतें मध्य से बिना किसी सहारे के निर्मित होंगी।
- इन विशाल छतों के ठीक नीचे माँ सर्वमंगला अपने सृजनात्मक, कल्याणक, वात्सल्यमयी तथा माधुर्य रुप में विराजेंगी।
- पीठम् की तल मंजिल पर एक अत्याधुनिक प्रदर्शनी होगी, जिसके माध्यम से लतयुग, त्रेता, द्वापर एवं कलियुग में भारतीय नारी की भूमिका के सुनहरे अध्यायों को दर्शाया जाएगा। प्रथम मंजिल पर माँ सर्वमंगला माता के चारों ओर चलित परिक्रमा पथ होगा।
- मन्दिर के चारों ओर स्टेडियमनुमा सीढ़ियों का निर्माण किया जा रहा है, जहाँ बैठकर श्रद्धालुगण माता का मनोहारी दर्शन कर सकेंगे। मन्दिर भवन के चारों ओर नयनाभिराम बाग-बगीचे भी होंगे, जिनमें बैठकर श्रद्धालुओं को अनुपम शान्ति का अनुभव होगा।

वात्सल्य ग्राम वृन्दावन स्थित गुफा मंदिर में विराजमान श्री सर्वमंगला माता का वर्तमान दिव्य दर्शन

'मंगल मानस' एक नयनाभिराम मंदिर संकुल है। पर्वताकार इस स्थान के भीतर एक कृत्रिम गुफा में माँ सर्वमंगला सिन्दूरी श्री विग्रह के रूप में दिव्य दर्शन देती हैं। गुफा के बाहर 51 टन वजनी, 12 फीट ऊँचे एवं प्राकृतिक रूप से माँ नर्मदा की गोद में निर्मित श्री नर्मदेश्वर महादेव शिवलिंग रूप में सपरिवार विराजमान हैं।

कामधेनु गौगृह गौशाला

गौमाता केवल हमारी धार्मिक आस्था ही नहीं बल्कि देश की अर्थव्यवस्था का भी महत्वपूर्ण स्तंभ है। वात्सल्य ग्राम की गौमाता यहाँ के उन बच्चों की पालक भी है जिन्हें अपनी माँ का दूध नहीं मिला। इस सर्वसुविधायुक्त गौशाला में गौवंश का संरक्षण एवं संवर्धन किया जाता है। यहाँ लगभग सभी भारतीय नस्लों के गौवंश का संरक्षण एवं संवर्धन किया जा रहा है।

मीरा माधव निलयम् अतिथि गृह

वात्सल्य ग्राम, वृंदावन पधारने वाले अतिथियों के सत्कारपूर्ण आतिथ्य हेतु सर्वसुविधायुक्त मीरा-माधव निलयम में सुखद आवास के साथ स्वादिष्ट एवं पौष्टिक भोजन की व्यवस्था भी उपलब्ध है। आप इसके कमरे यहाँ आने से पूर्व ऑनलाइन भी बुक कर सकते हैं। इसकी व्यवस्थाएँ आई.एस.ओ.प्रमाणित हैं।

भक्ति और अपने आराध्य के प्रति समर्पण को प्रदर्शित करता हुआ वात्सल्य ग्राम का मीरा माधव मन्दिर, जहाँ योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण के प्रति भक्ति में तन्मय मीराबाई का दर्शन मन को भावविभोर कर देता है।

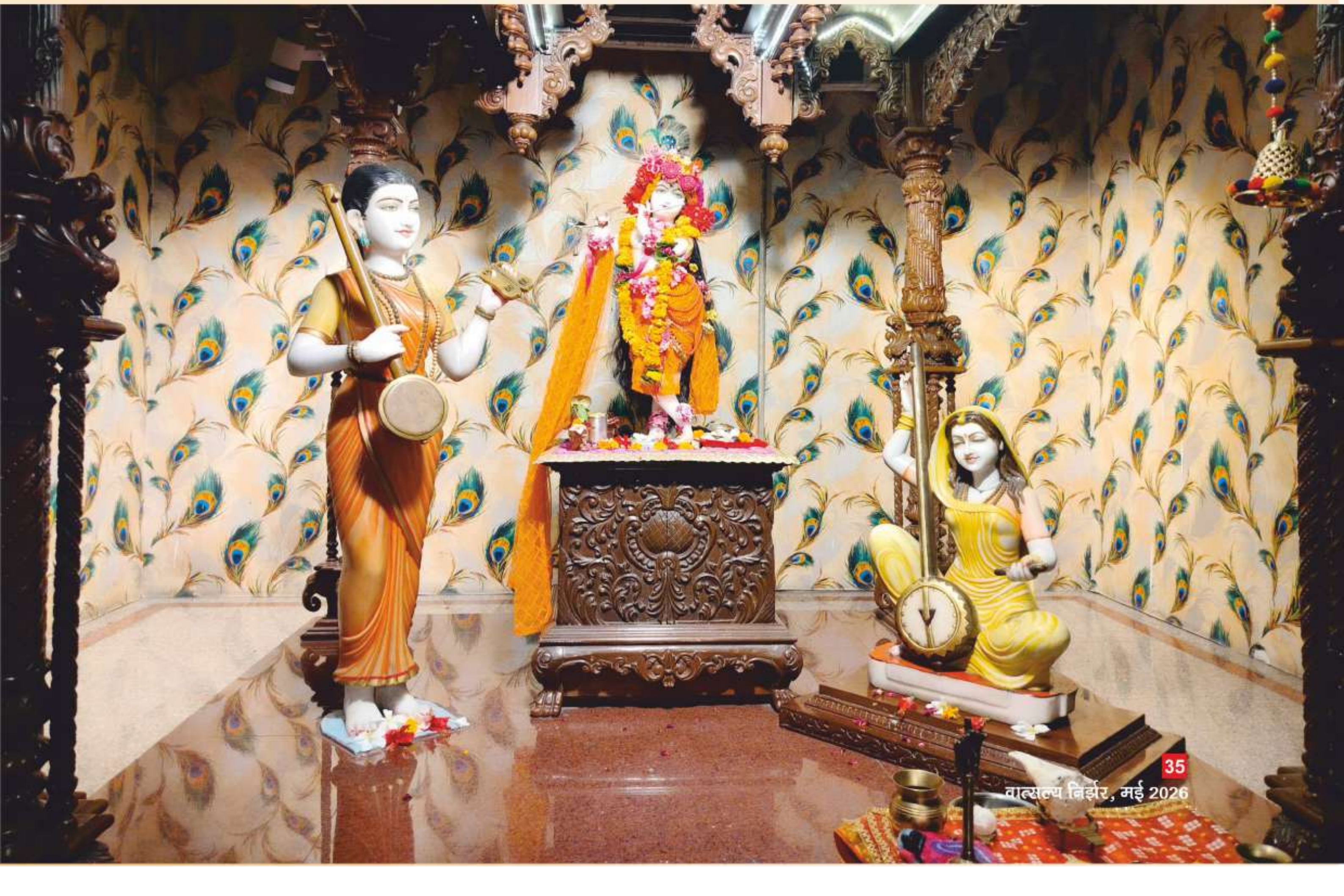

श्री सद्‌गुरु कुटीर

'युगपुरुष कुटीर' वात्सल्य ग्राम का चेतना केन्द्र हैं, जहाँ भक्तों को समय-समय पर भारत की आध्यात्मिक शक्ति परमपूज्य सद्‌गुरुदेव अनन्तश्री विभूषित युगपुरुष महामण्डलेश्वर स्वामी परमानन्द गिरि जी महाराज का पावन सानिध्य प्राप्त होता है।

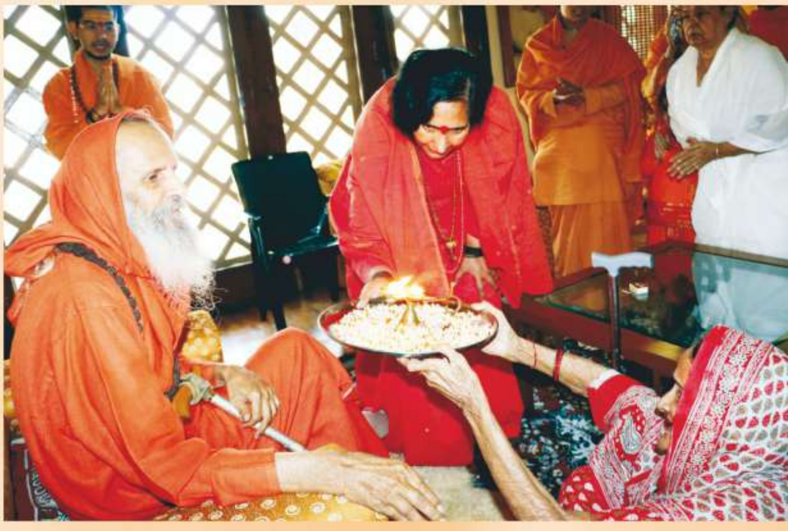

नन्हीं दुनिया

स्कूली शिक्षा के साथ बच्चों का स्वस्थ मनोरंजन भी हो सके, इसके लिए वात्सल्य ग्राम, वृंदावन में बच्चों के पार्क 'नन्हीं दुनिया' का निर्माण किया गया है। जिसका सुरम्य वातावरण बच्चों को आनंदित करता है।

श्री भानुप्रताप शुक्ल स्मृति क्रान्तिकुंज

वात्सल्य ग्राम के निर्माण में अपना अद्‌भुत योगदान देने वाले देश के महान चिंतक, विचारक, साहित्यकार और राष्ट्रवादी पत्रकारिता के पर्याय स्व.श्री भानुप्रताप शुक्ल जी की स्मृति में यहाँ शहीद संग्रहालय भवन निर्मित किया गया है। यहाँ एक देशभक्त श्री रविचन्द्र गुप्ता द्वारा अपने रक्त से चित्रित करवाई गई भारत के स्वाधीनता संग्राम की दुर्लभ रक्त चित्र प्रदर्शनी प्रदर्शित की गई है।

वासुकी श्रेयम्

पूज्या दीदी माँ जी के वात्सल्यमयी मार्गदर्शन में निरन्तर चल रही वात्सल्य यात्रा का नया पड़ाव है 'वासुकी श्रेयम्'। साँपों के माध्यम से अपनी जीविका चलाने वाली सपेरा जाति के बच्चों को यहाँ संस्कारपूर्ण आवासीय शिक्षा प्रदान की जा रही है। वात्सल्य ग्राम की सुन्दर आवासीय व्यवस्थाओं तथा कृष्णा ब्रह्मरतन विद्या मन्दिर की संस्कारपूर्ण एवं निःशुल्क शिक्षा के बीच ये बच्चे स्वर्णिम भविष्य की ओर अग्रसर हैं।

प्रेमवती गुप्ता नेत्र चिकित्सालय

पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी की पावन प्रेरणा से वात्सल्य ग्राम, वृंदावन में प्रेमवती गुप्ता नेत्र चिकित्सालय संचालित है जिसमें अत्याधुनिक ऑपरेशन थियेटरों की सुविधा के साथ मोतियाबिन्द ऑपरेशन शिविरों का आयोजन निःशुल्क रूप से होता रहता है। अब तक यहाँ के अत्याधुनिक ऑपरेशन थियेटर में ख्यातनाम विशेषज्ञ नेत्र चिकित्सकों के द्वारा सम्पन्न हो चुके ऐसे अनेक शिविरों में हज़ारों रोगियों को नई नेत्र ज्योति प्राप्त हुई है।

स्वामी परमानन्द प्राकृतिक चिकित्सालय

प्राकृतिक चिकित्सा का लाभ लेकर लोग स्वस्थ रह सकें, इस हेतु वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन में 'स्वामी परमानन्द प्राकृतिक चिकित्सालय' का लोकार्पण 1 जनवरी 2024 को किया गया था। यहाँ आयुर्वेद विशेषज्ञों की सेवाओं के साथ प्राकृतिक चिकित्सा व्यवस्था उपलब्ध रहती है।

वात्सल्य ग्राम

पूज्या दीदी माँ जी की तप सिद्धि का प्रतिफल

- संजय भैया
(महासचिव-परमशक्ति पीठ)

'परमशक्ति पीठ' कोई सामान्य औपचारिक संस्था, सोसायटी या ट्रस्ट मात्र नहीं है कि उसका वैधानिक गठन कर लिया गया। एक औपचारिक कार्य योजना बनी और उसकी पूर्ति हेतु तमाम ट्रस्टीगण जुट गए। ऐसा होता तो यह भी 135 करोड़ जनसंख्या के इस विशाल देश में चल रहे समाजोत्थान के लाखों नीरस कार्यों में से एक होता।'

माँ के द्वारा भक्ति और करुणा के संस्कारों में पगी, नियति प्रदत्त अपने पूज्य सद्गुरुदेव की विरतिपूर्ण जीवन पुस्तक को पढ़कर, माँ जैसी स्निग्धता और गुरु जैसी स्नेहयुक्त कठोर निर्मिती में ढली एक साध्वी की करुणा और वत्सलता ने धीरे-धीरे एक ऐसी कृति को जन्म दे दिया, जो न किसी ट्रस्ट को जानती थी, न ट्रस्टियों की मोहताज थी और ना ही किसी सामाजिक मान्यता को पाना चाहती थी।

एक पारखी समाज शिल्पी ने उसे पहचाना और सुन्दर से शब्द दे दिए। नाम पड़ा 'वात्सल्य।'

कहीं पर इसे पलना था, किलकारियाँ भरनी थीं, बड़े होना था, सपने बुनने भी थे और उन्हें वास्तविक भी होना था, तो नया-नया सृजन होता गया। आप लोग उसे संस्था मानते होंगे किन्तु यह तो उसी वात्सल्य का आँगन है जो आज युवा होकर आप सबके समक्ष अपना परिचय अपनी आभा से स्वयं दे रहा है।

यह उसी वात्सल्य की एक जीवन यात्रा है, जो आज सुगढ़ संस्कारों के साथ किन्हीं गोयल जी के परिवार को संस्कारों से समृद्ध कर रही है तो कहीं ऋद्धि और सिद्धि बनकर अवस्थी या खत्री परिवारों पर बरस रही है। कहीं संवेदनशील इंजीनियर, डॉक्टर, शिक्षक, अधिवक्ता बनकर समाज में चमक रही है।

मैं आपका परिचय करवाता हूँ हमारे सामाजिक व राष्ट्र शिल्पी ब्रह्मलीन श्री भानुप्रताप जी शुक्ल का, जिन्होंने अपनी लेखनी से वात्सल्य को नित-नूतन अर्थ दे दिए और तमाम संघर्षों में दीप स्तम्भ की भाँति वात्सल्य के साथ अडिग होकर खड़े रहे, बिना ये परवाह किये कि संगठन या समाज उनके लिए क्या बोलता कहता सुनता है। वात्सल्य के उन्हीं शब्दों को मुखरित किया पूज्य दीदी माँ ने, जिन्होंने अपनी तप सिद्धि से ना केवल इसके नए आयाम गढ़े बल्कि उन्हें अपने लक्ष्य तक भी पहुँचाया। उन्हीं शब्दों का सृजन वास्तव में उनके द्वारा जाग्रत उन यशोदाओं के 'निरहम् समर्पण' द्वारा हुआ कि उसको शब्द दिए जा सके या कहें कि शब्दों को उन्हीं के द्वारा रूपांकित किया गया।

पूज्य गुरुदेव का सानिध्य प्राप्त होने से भी पहले जब पूज्य दीदी माँ अपनी जननी के साथ वृन्दावन आतीं तो यहाँ निराश्रित स्त्रियों को देखकर वो सोचती थीं कि इनके लिए कुछ श्रेष्ठ किया जाना चाहिए। परमशक्ति पीठ के गठन के समय यही करुणा उद्देश्यों में परिवर्तित हो गई। वर्ष 1992 में नारी शक्ति के उत्कर्ष को लक्ष्यगत रखते हुए इन्हीं उद्देश्यों के साथ परमशक्ति पीठ का गठन हो गया किन्तु ईश्वर ने तो कुछ और ही निश्चित किया था।

परमशक्ति पीठ की भूमिका तो वर्ष 1984 के दंगों से बहुत पहले ही ईश्वर द्वारा लिख दी गई थी जब पूज्य दीदी माँ जी पंजाब के आतंकवाद से ग्रस्त क्षेत्रों में प्रवास कर

रही थीं और घूम घूमकर यह संदेश दे रहीं थीं कि :

'खालिस्तान ना माँगो, सारा हिन्दुस्तान तुम्हारा है।'

उस समय पूज्य दीदी माँ जी ने खालिस्तानी आतंक से प्रभावित क्षेत्रों में देखा कि बहुत सारे वे युवा बच्चे जिनके माता पिता नहीं रहे या अन्य किसी कारणवश वे निराश्रित हुए, अपने रिश्तेदारों से प्रताड़ित हुए, तो छोटी उम्र में ही वे अपने हाथों में हथियार थामकर आतंकवादियों के मोहरे बन गए। बस उसी समय पूज्य दीदी माँ जी ने संकल्प लिया था कि हम कभी सक्षम होंगे तो ऐसे निराश्रित बच्चों को संभालेंगे।

तो यही यात्रा वर्ष 1993 से प्रारम्भ हो गई और वास्तव में परमशक्ति पीठ के उद्देश्य जो कि स्त्री शक्ति को समर्पित थे, उनमें परिवर्तन करना पड़ा, जब एक निराश्रित बालक पूज्य दीदी माँ को एक विरक्त संत ने सौंप दिया। कार्य प्रारंभ हो गया। अब बालक आ गया तो स्थान की आवश्यकता भी पड़ी। वात्सल्य के गौमुख की स्थापना दिल्ली के पटपड़गंज में हुई। धन नहीं था और दिल्ली जैसे शहर में स्थान लिया जाना था तो अनेक 'भामाशाहो' ने आगे आकर वह व्यवस्था पूर्ण की।

पटपड़गंज के तीन कमरों का वह छोटा सा स्थान, जिसमें एक-एक करके लगभग बीस बेटे बेटियाँ हो गए, अब वात्सल्य की गंगा की तीव्र धार का वेग सहने में अक्षम होने लगा था। वर्ष 1996 आते-आते पूज्य गुरुदेव को दिल्ली में ही एक भक्त ने तीन हजार वर्गफीट भूमि दान दी, जिसे उन्होंने परमशक्ति पीठ को वात्सल्य के विस्तार हेतु कृपापूर्वक प्रदान कर दिया। इस भूमि पर दस हजार वर्गफीट का निर्माण संकल्पित था। संस्था के आर्थिक अभावों के बीच हमारे प्रथम नंदजी सुभाष भैया की सत्प्रेरणा से दिल्ली के ही बिल्डर बिट्टू जी और अश्विनी जी संस्था के साथ खड़े हो गए कि मटेरियल आप देते जाना बाकी निर्माण की चिन्ता हम करेंगे। फिर देखते-देखते पूज्य दीदी माँ का संकल्प 'वात्सल्य मंदिर' बनकर खड़ा हो गया और उसका उद्घाटन किया, भारत सरकार के तत्कालीन शिक्षा मंत्री डॉक्टर मुरली मनोहर जोशी जी और विश्व हिन्दू परिषद के अंतर्राष्ट्रीय महामंत्री श्री अशोक जी सिंघल ने। यहाँ ये बालक बालिकाएँ यशोदाओं की गोद में पल्लवित होने लगे और थोड़े समय में ही बीस से चालीस हो गए।

आज इसी स्थान पर छोटे बच्चों की 'वात्सल्य अकादमी' जिसमें ढाई साल से लेकर पाँच साल तक के बच्चों को शिक्षा, संस्कार और बड़े बच्चों की कम्प्यूटर एवं सिलाई, कढ़ाई इत्यादि के प्रशिक्षण की व्यवस्था श्रीमती नीरज गोयल जी के कुशल नेतृत्व में कार्यरत है और हर वर्ष सैकड़ों बच्चों को इनफॉर्मल एजुकेशन और कम्प्यूटर स्किल से पारंगत करने का कार्य बहुत ही सुंदर ढंग से हो रहा है। 'वात्सल्य मंदिर' की स्थापना से लेकर जब उस केन्द्र पर बच्चों की संख्या बढ़ने लगी और वात्सल्य की परिवार अवधारणा को साकार होने की बाधा दिखने लगी तो बड़ा गाँव बसाया जाए, यह उत्कट इच्छा सभी की प्रगाढ़ हो गई। एक बड़ी ही महत्वाकांक्षी और बहुउद्देशीय परियोजना सबके मन में थी, परन्तु यह कार्य इतना सहज भी न था। इसलिए पूज्य गुरुदेव जी महाराज एवं दीदी माँ जी के मार्गदर्शन में इस पर विचार मंथन प्रारंभ हुआ।

'वात्सल्य मंदिर' की स्थापना से लेकर जब उस केन्द्र पर बच्चों की संख्या बढ़ने लगी और वात्सल्य के परिवार अवधारणा को साकार होने की बाधा दिखने लगी तो बड़ा गाँव बसाया जाए यह उत्कट इच्छा सभी की प्रगाढ़ हो गई। वात्सल्य की धारा वृन्दावन की ओर मुड़ गई थी। अनेक उतार-चढ़ावों के बीच वहाँ वात्सल्य ग्राम के प्रथम चरण का निर्माण तेजी से हुआ और 8 मई 2003 को उसका लोकार्पण हो गया। बच्चे दिल्ली से वृन्दावन शिफ्ट हो गए।

आगे किस प्रकार से वृन्दावन का यह वात्सल्य ग्राम अनेक सेवा प्रकल्पों का संकुल बनता गया, यह आप पिछले पृष्ठों में देख ही चुके हैं। पूज्या दीदी माँ जी के पावन मार्गदर्शन और परमशक्ति पीठ के उदारमना सहयोगियों और कार्यकर्ताओं के साथ यह यात्रा निरन्तर चलती रहेगी।

वात्सल्य ग्राम/परमशक्ति पीठ के अभियान

बेटी बचाओ अभियान

पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी की पावन प्रेरणा पाकर वात्सल्य ग्राम, वृंदावन की साध्वी बहनों ने ब्रज क्षेत्र की ढाई लाख महिलाओं से 'कन्या भ्रूण हत्या निषेध संकल्प पत्रों' पर हस्ताक्षर करवाकर उन्हें बेटी बचाने हेतु प्रेरित किया। पूज्य गुरुदेव युगपुरुष महामंडलेश्वर अनन्तश्री विभूषित स्वामी परमानन्द जी महाराज सहित अनेक तेजस्वी आध्यात्मिक शक्तियों ने इस आंदोलन को आशीर्वाद प्रदान किया। कन्या भ्रूण रक्षा विषय को लेकर दीदी माँ जी का जनजागरण अभियान निरन्तर संचालित है।

बेटियों की सामाजिक पुनर्प्रतिष्ठा का अभियान

पारिवारिक पालन-पोषण और शिक्षा के बाद वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन स्थित वात्सल्य परिवारों की बेटियों के विवाह सम्पन्न किये जाते हैं। पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के आशीर्वाद से ये बेटियाँ देश के प्रतिष्ठित परिवारों में ब्याही जा रही हैं।

राष्ट्र रक्षा सूत्र बंधन यात्रा

संविद गुरुकुलम् गर्ल्स सैनिक स्कूल, वात्सल्य ग्राम, वृंदावन से बेटियों का एक दल प्रतिवर्ष रक्षाबंधन पर्व के दिन देश की किसी एक सीमा पर पहुँचता है और अपने सैनिक भाईयों की कलाई पर रक्षासूत्र सजाकर राखी का पावन पर्व मनाता है। पूज्या दीदी माँ जी के इस अभियान को राष्ट्रीय स्तर पर सराहना मिली है। वात्सल्य ग्राम की इस पहल से भारत के सभी सैन्यबलों में कार्यरत् सैनिकों का मनोबल भी बढ़ता है।

प्रधानमंत्री निवास एवं राष्ट्रपति भवन में राष्ट्र रक्षा सूत्र बंधन यात्रा की झलकियाँ

बालिका व्यक्तित्व विकास शिविर

वात्सल्य ग्राम, वृंदावन स्थित संविद गुरुकुलम् गर्ल्स सैनिक स्कूल प्रतिवर्ष जून माह में 'बालिका व्यक्तित्व विकास शिविर' का आयोजन करता है। दस दिवसीय इस शिविर में बेटियाँ अपने व्यक्तित्व को निखारने की विभिन्न कलाओं से परिचित होती हैं। पूज्या दीदी माँ जी का आध्यात्मिक सानिध्य उन्हें सार्थक जीवन के सूत्र प्रदान करता है।

उत्तराखण्ड आपदा राहत अभियान

वर्ष 2013 में केदारघाटी, उत्तराखण्ड की भयानक जलप्रलय के तुरन्त बाद पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के मार्गदर्शन में परमशक्ति पीठ का राहत अभियान प्रारंभ हुआ। प्रभावित गाँवों में राहत सामग्री का वितरण किया गया। जरूरतमन्द बच्चों और महिलाओं को श्वात्सल्य सेवा केन्द्रोंश के माध्यम से सुरक्षित एवं निःशुल्क आश्रय, भोजन और शिक्षा उपलब्ध करवाई गई। महिलाओं को इन केन्द्रों के माध्यम से व्यावसायिक व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान कर स्वावलंबी बनाने का सफल प्रयत्न किया गया।

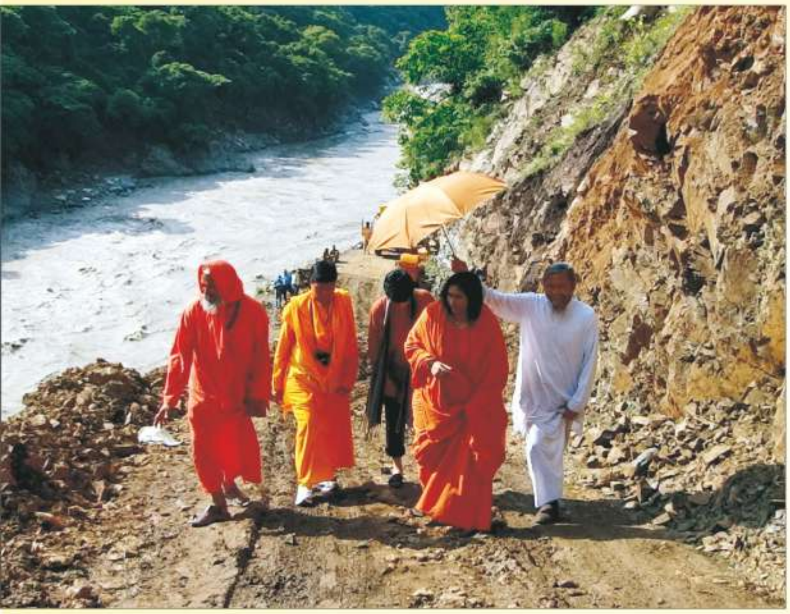

नेपाल भूकम्प आपदा राहत अभियान

भूकम्प पीड़ित नेपाल में दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के मार्गदर्शन में परमशक्ति पीठ कार्यकर्ताओं के माध्मम से राहत सामग्री का वितरण किया गया। काठमाण्डू जिले के नष्ट हो चुके दो पहाड़ी गाँवों को गोद लेकर उनमें 'वात्सल्य कुटीरों' का निर्माण करवाकर उन्हें प्रभावित परिवारों को निःशुल्क रूप में वितरित किया गया। तत्कालीन नेपाल सरकार द्वारा इस सद्कार्य हेतु दीदी माँ जी का अभिनन्दन किया गया।

नि:शुल्क नेत्र चिकित्सा अभियान

पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी की पावन प्रेरणा से वात्सल्य ग्राम, वृंदावन स्थित प्रेमवती गुप्ता नेत्र चिकित्सालय के माध्यम से नि:शुल्क मोतियाबिन्द ऑपरेशन शिविरों का आयोजन वर्षों से किया जा रहा है। मुम्बई के ख्यात आई सर्जन एवं परमशक्ति पीठ अनन्य सहयोगी डॉ.श्याम अग्रवाल एवं उनके साथी डॉक्टर्स के द्वारा अब तक यहाँ के अत्याधुनिक ऑपरेशन थियेटर में सम्पन्न हो चुके ऐसे अनेक शिविरों में हजारों मोतियाबिन्द रोगियों को नई नेत्र ज्योति मिली है।

वात्सल्य गंगा अभियान

आधुनिक उन्नति के प्रवाह में हिन्दू धर्म का वास्तविक स्वरूप बना रहे इसके लिए धर्म प्रचारकों की आवश्यकता सदैव प्रासंगिक रहेगी। 'वात्सल्य गंगा अभियान' इसी विचार का कार्यरूप है। पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी ने धर्म रक्षा के लिए उन बेटियों से आव्हान किया जो इस विचार के लिए स्वयं को समर्पित करना चाहती हों। ऐसा संकल्प लेने वाली अनेक बेटियों को उन्होंने गंगा मैया के पावन तट पर हरिद्वार में दीक्षित किया, जो आज देश के अनेक भागों में सनातन धर्म का प्रचार-प्रसार करने के साथ ही सामाजिक विषमता उन्मूलन हेतु जनजागरण करते हुए पर्यावरण रक्षा के लिए भी लोगों को जागरूक कर रही हैं।

परमशक्ति पीठ के राष्ट्रव्यापी प्रकल्प

वात्सल्य एकेडमी, नई दिल्ली

ज्वाला नगर, दिल्ली में बच्चों एवं महिलाओ के लिए 'वात्सल्य एकेडमी' के माध्यम से अनेक प्रकार के प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों की व्यवस्था की गई है। इसके अन्तर्गत नर्सरी से लेकर आठवीं कक्षा तक प्ले वे स्कूल संचालित किया जा रहा है। इस प्रकल्प का मुख्य उद्देश्य समाज के उन बच्चों एवं महिलाओं को लाभान्वित करना है जो आर्थिक अभावों के चलते महंगे व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्रों में प्रशिक्षण नहीं ले पाते हैं। बालिकाओं के लिए शैक्षणिक शुल्क में विशेष छूट का प्रावधान भी यहाँ किया गया है ताकि अभिभावक अपनी बेटियों को पढ़ा सकें। इस प्रकार 'न्यूनतम शुल्क में अधिकतम प्रशिक्षण सुविधाएँ' देकर वात्सल्य एकेडमी निरन्तर अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर है।

वात्सल्य ग्राम, ग्राम-कोठी, ओंकारेश्वर, मध्यप्रदेश

मध्यप्रदेश की पवित्र ज्योर्तिलिंग तीर्थ नगरी ओंकारेश्वर के निकट स्थित है परमशक्ति पीठ का यह सेवा केन्द्र। माँ नर्मदा के पावन तट पर निर्मित यह केन्द्र आसपास के अभावग्रस्त ग्रामीण जीवन में आशा का उजियारा लेकर आया है। पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतंभरा जी की पावन प्रेरणा से यहाँ वनवासी बेटियों के लिए निःशुल्क आवासीय कन्या विद्यालय कार्य कर रहा है। यहाँ अध्ययनरत् बेटियों के लिए आवास, भोजन, यूनिफार्म तथा पठन-पाठन सामग्री निःशुल्क उपलब्ध करवाई जाती है। सी.बी.एस.ई. प्रणाली आधारित उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं हेतु नवनिर्मित भवन में विद्यार्थियों की प्रवेश प्रक्रिया प्रारंभ है।

संविद गुरुकुलम् इंग्लिश मीडियम स्कूल, ग्राम-सिजई, छतरपुर, मध्यप्रदेश

'संविद गुरुकुलम् स्कूल' छतरपुर जिले स्थित ग्राम-सिजई में संचालित है। सुदूर देहात क्षेत्र के बच्चे यहाँ न्यूनतम् शुल्क में श्रेष्ठतम् शिक्षा प्राप्त कर सुनहरे भविष्य की ओर बढ़ रहे हैं।

राजलक्ष्मी संविद गुरुकुलम् सैनिक स्कूल, ग्राम-वारियां, नालागढ़, हिमाचल प्रदेश

हिमाचल प्रदेश के सोलन जिले स्थित ग्राम-वारियां में स्थित है राजलक्ष्मी संविद गुरुकुलम् सैनिक स्कूल।' इसे भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय के अधीन कार्यरत् सैनिक स्कूल सोसायटी द्वारा सैनिक स्कूल के रूप में मान्यता प्राप्त है। यहाँ छात्रों हेतु उपलब्ध आवासीय व्यवस्था आधुनिक शिक्षा मानकों के साथ प्राचीन गुरुकुलम् पद्धति के अनूठे संयोग को पूरा करती है। यह समन्वय वर्तमान शिक्षा अवधारणाओं तथा हमारे देश के प्राचीन मूल्यों और सिद्धांतों को जोड़ता है। यहाँ अत्याधुनिक सुविधाओं सहित स्मार्ट क्लास रूम्स, अत्याधुनिक लैब्स, शूटिंग रेंज, घुड़सवारी तथा स्वीमिंग पूल जैसी व्यवस्थाएँ उपलब्ध हैं।

वात्सल्य सेवा केन्द्र, बाड़मेर, राजस्थान

राजस्थान के बाड़मेर में वात्सल्य सेवा केन्द्र के रूप में सुदूर गाँवों के आर्थिक अभावग्रस्त परिवारों के बेटियों के लिए छात्रावास का संचालन किया जा रहा है। यहाँ ये छात्राएँ आवास एवं भोजन की निःषुल्क सुविधा प्राप्त करते हुए निकट के स्कूलों में अपनी पढ़ाई करती हैं।

वात्सल्य ग्राम, ग्राम-महीषा, डाकोरजी, गुजरात

गुजरात स्थित तीर्थ नगरी के निकट ग्राम-महीषा में स्थित है-वात्सल्य ग्राम। अभी यहाँ निर्मित एक सर्वसुविधायुक्त भवन में नर्सरी स्कूल संचालित किया जाता है। भविष्य में यहाँ अन्य सेवा प्रकल्पों को आरंभ किये जाने की योजना है।

वात्सल्य गंगा आश्रय, एवं माँ राजराजेश्वरी मंदिर, हरिद्वार

पावन तीर्थनगरी हरिद्वार के कनखल में स्थित है वात्सल्य गंगा आश्रय। यह बीस सर्वसुविधायुक्त कमरों, एक डॉरमेट्री तथा एक प्रवचन हॉल से युक्त आवासीय व्यवस्था है। कल-कल प्रवाहित गंगा मैया की निर्मल धारा के तट पर निर्मित इस परिसर में 'माता महाकामेश्वरी मन्दिर' में उनका दिव्य एवं भव्य दर्शन होता है।

स्वामी परमानन्द प्राकृतिक चिकित्सालय, योग एवं अनुसंधान केन्द्र, नई दिल्ली

प्राकृतिक चिकित्सा का लक्ष्य प्रकृति में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध तत्त्वों के उचित इस्तेमाल द्वारा रोग का मूल कारण समाप्त करना है। यह न केवल एक चिकित्सा पद्धति है बल्कि मानव शरीर में उपस्थित आंतरिक महत्त्वपूर्ण शक्तियों या प्राकृतिक तत्त्वों के अनुरूप एक जीवन शैली भी है। यह जीवन कला तथा विज्ञान में एक संपूर्ण क्रांति है। आयुर्वेद के इसी विचार के दृष्टिगत पूज्या दीदी माँ जी की प्रेरणा से इस चिकित्सालय की स्थापना की गई है, जिसमें विशेषज्ञ आयुर्वेदाचार्यों के द्वारा प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति से विभिन्न रोगों का उपचार किया जाता है।

वात्सल्य ग्राम के साथ जुड़ने के लिए धन्यवाद

परमशक्ति पीठ के सेवाकार्यों में आप अपना सहयोग इस प्रकार दे सकते हैं :

बैंक खातों में सीधे जमा करने के लिए जानकारियाँ

बैंक का नाम : पंजाब नेशनल बैंक
खाता क्रमांक : 1518000101014134
आई.एफ.एस.सी. कोड : PUNB0151800

बैंक का नाम : स्टेट बैंक ऑफ इन्डिया
खाता क्रमांक : 10137296689
आई.एफ.एस.सी.कोड : SBIN0007085

दान के लिए ऑनलाइन लिंक :
https://www.vatsalyagram.org/donate

ऑनलाइन दान के लिए कृपया
इन क्यू.आर.कोड्स को स्केन करें

चेक अथवा डिमांड ड्राफ्ट द्वारा भी दान राशि परमशक्ति पीठ कार्यालय में भेजी जा सकती है।

प्रधान कार्यालय का पता :
परमशक्ति पीठ
लव–102, अग्रसेन आवास,
66, इन्द्रप्रस्थ विस्तार, पटपड़गंज, नई दिल्ली –110092
सम्पर्क सूत्र : 011-22238751, 9999971714, 9999971716
ईमेल : donorcare@vatsalyagram.org **वेबसाइट :** www.vatsalyagram.org

आपका सहयोग आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है।

योगदान प्रपत्र

जी हाँ, मैं वात्सल्य ग्राम के सेवा प्रकल्पों में अपना योगदान देना चाहता हूँ / चाहती हूँ। मेरा व्यक्तिगत विवरण इस प्रकार है।

श्री/श्रीमती/कुमारी ____________________

व्यवसाय ____________

पता ____________________

____________ पिनकोड ________

सम्पर्क फोन नंबर ____________

ईमेल आई.डी. ____________________

दान राशि (अंकों में) ________ (शब्दों में) ____________

परमानेंट अकाउंट नंबर (PAN) ____________

वैशिष्ट्यम् का निर्माणाधीन भवन

पद्म भूषण अलंकरण

समाजसेवा के क्षेत्र में विशेष कार्य करने हेतु
पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी को भारत की महामहिम राष्ट्रपति
श्रीमती द्रौपदी जी मुर्मु द्वारा वर्ष 2025 के 'पद्म भूषण' अलंकरण से
विभूषित किया गया।

साध्वी ऋतम्भरा

मैं, भारत की राष्ट्रपति, द्रौपदी मुर्मु, व्यक्तिगत गुणों के लिए आपके सम्मानार्थ, पद्म भूषण प्रदान करती हूँ।

नई दिल्ली
दिनांक 27 मई 2025

द्रौपदी
राष्ट्रपति

पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी को 'पद्म भूषण' सम्मान प्राप्त होने पर राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली में बधाई देते हुए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी एवं माननीय गृहमंत्री श्री अमित शाह।

GOLDEN BOOK OF
WORLD RECORDS

Certificate of Excellence

UNIQUE FAMILY BASED REHABILITATION CENTER

The World Record of managing 'orphan rehabilitation center through a unique family-based model' has been achieved by **Vatsalya Gram** conceptualized by **Sadhvi Ritambhara ji (Didi Maa)** from Vrindavan, Uttar Pradesh, India.

Vatsalya Gram has rehabilitated orphaned / abandoned people in the form of families where such children, destitute women and other dispossessed elderly women live together in individual homes as a family. Till December, 2014; hundreds of people have been rehabilitated through this unique and scalable concept.

Golden Book of World Records

This certificate must not be reproduced without the permission of Golden Book of World Records.
www.goldenbookofrecords.com

पूज्या दीदी माँ को प्राप्त राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान

वात्सल्य ग्राम के रूप में 'परिवार आधारित पुनर्वास केन्द्र' को सार्थकता प्रदान करने हेतु पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी एवं उनकी संस्था 'परमशक्ति पीठ' को अमेरिका की संस्था 'गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड' ने विश्व कीर्तिमान का सम्मान दिया।

पीयरलैण्ड (टेक्सॉस), अमेरिका के मेयर श्री टॉम रीड अपने कार्यालय में पूज्या दीदी माँ जी का सम्मान करते हुए।

न्यूयॉर्क (अमेरिका) में भारत के काउंसलेट जनरल श्री ध्यानेश्वर मुलये पूज्या दीदी माँ जी का अभिनन्दन करते हुए।

इंग्लैण्ड स्थित ब्रिटिश पार्लियामेण्ट 'वेस्ट मिनिस्टर' द्वारा पूज्या दीदी माँ जी का अभिनन्दन।

भारत की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल जी के साथ पूज्या दीदी माँ जी।

भारत के महामहिम राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी के साथ पूज्या दीदी माँ जी।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के आवास पर रक्षाबन्धन पर्व का सुन्दर दृश्य

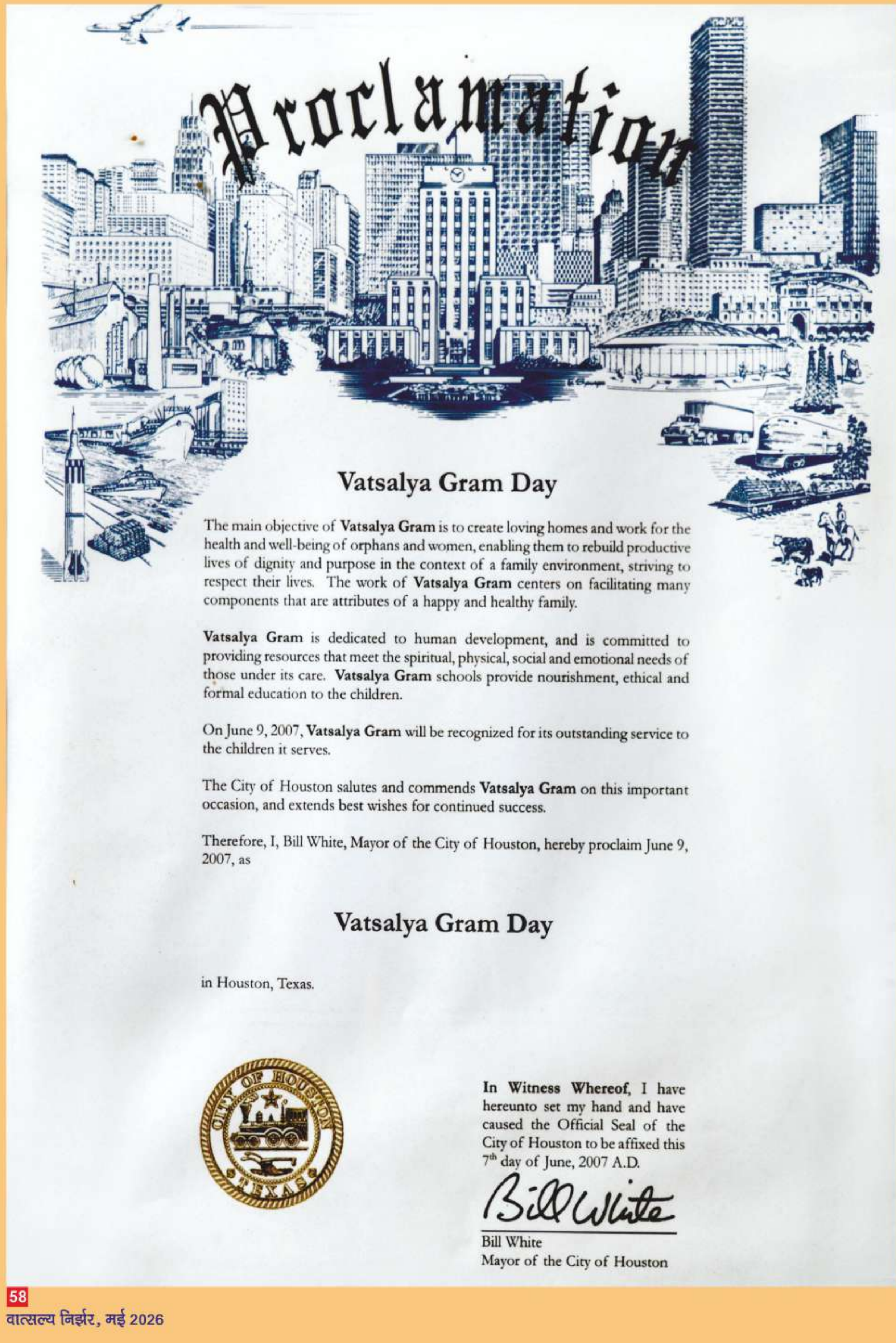

Proclamation

Vatsalya Gram Day

The main objective of **Vatsalya Gram** is to create loving homes and work for the health and well-being of orphans and women, enabling them to rebuild productive lives of dignity and purpose in the context of a family environment, striving to respect their lives. The work of **Vatsalya Gram** centers on facilitating many components that are attributes of a happy and healthy family.

Vatsalya Gram is dedicated to human development, and is committed to providing resources that meet the spiritual, physical, social and emotional needs of those under its care. **Vatsalya Gram** schools provide nourishment, ethical and formal education to the children.

On June 9, 2007, **Vatsalya Gram** will be recognized for its outstanding service to the children it serves.

The City of Houston salutes and commends **Vatsalya Gram** on this important occasion, and extends best wishes for continued success.

Therefore, I, Bill White, Mayor of the City of Houston, hereby proclaim June 9, 2007, as

Vatsalya Gram Day

in Houston, Texas.

CITY OF HOUSTON
TEXAS

In Witness Whereof, I have hereunto set my hand and have caused the Official Seal of the City of Houston to be affixed this 7th day of June, 2007 A.D.

Bill White

Bill White
Mayor of the City of Houston

Proclamation

Office Of THE MAYOR

CITY OF PEARLAND

Whereas: *Vatsalya Gram Was Established In May 2003 In Vrindavan, India, And Was Conceived By One Of The Most Prominent Citizens Of Modern India, Sadhvi Ritambhara, And Is Supported By Many Individuals And Organizations In Texas And Around The World; And*

Whereas: *The Objective Of Vatsalya Gram Is To Create A Loving Home And Work For Th Survival, Health And Well Being Of Abandoned Orphans And Women Enabling Them To Rebuild Productive Lives Of Dignity And Purpose In A Family Environment; And*

Whereas: *The Vatsalya Gram Founder , Sadhvi Ritambhara, Will Visit Houston And Pearland Where She Will Attend Events Being Organized In Her Honor Where She Will Share Her Vision Of Vatsalya Gram And Will Receive Special Recognition For Her Many Accomplishments, And*

Whereas: *Vatsalya Gram Will Be A Global Force And Partner Of Choice Within A Worldwide Movement Dedicated To Transforming The Lives Of Abandoned Children And Women In Many Parts Of The World; And*

Now, Therefore: *I, Tom Reid, By The Power Vested In Me As The Mayor Of The City Of Pearland Texas, Do Hereby Proclaim June 9, 2007, As…*

"Vatsalya Gram Day"

In Pearland, Houston, And Surrounding Areas And I Ask All Citizens Both Near And Far To Join With Me In Recognizing The Establishment Of Vatsalya Gram, "A Village Of Affections," As A Unique Alternative To Orphanages And Women's Homes.

Given Under My Hand And Seal Of Office This 9th Day Of June 2007.

Tom Reid

Mayor, The City of Pearland

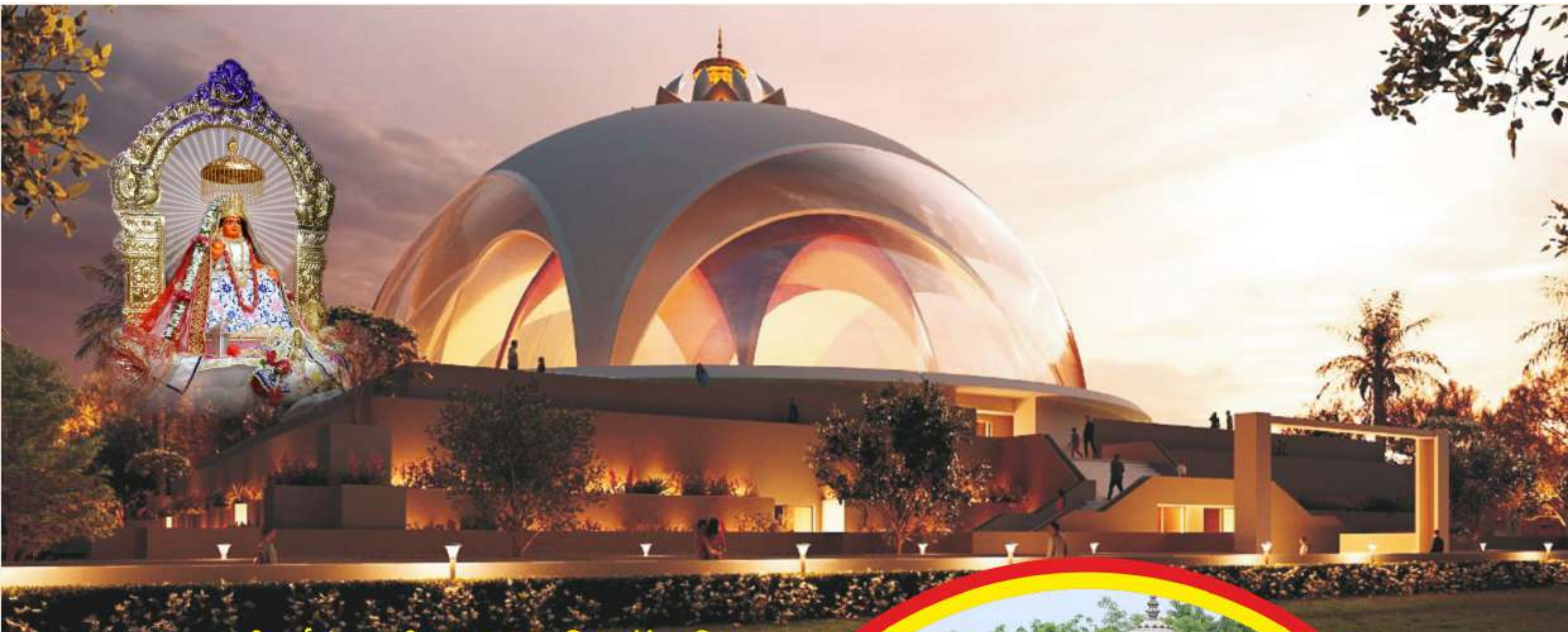

श्री सर्वमंगला पीठम् का प्रस्तावित मॉडल चित्र

वात्सल्य ग्राम वृन्दावन में निर्माणाधीन

श्री सर्वमंगला पीठम्

विशेषताएँ :

- लगभग डेढ़ लाख वर्गफीट क्षेत्रफल में विस्तारित एवं एक सौ चौदह फीट की ऊँचाई लिए हुए श्री सर्वमंगला पीठम् शिल्पकला की दृष्टि से अद्वितीय होगा।
- रज, तम और सत्व गुणों को प्रदर्शित करती इसकी तीन पारदर्शी छतें मध्य से बिना किसी सहारे के निर्मित होंगी।
- इन विशाल छतों के ठीक नीचे माँ सर्वमंगला अपने सृजनात्मक, कल्याणक, वात्सल्यमयी तथा माधुर्य रुप में विराजेंगी।
- पीठम् की तल मंजिल पर एक अत्याधुनिक प्रदर्शनी होगी, जिसके माध्यम से सतयुग, त्रेता, द्वापर एवं कलियुग में भारतीय नारी की भूमिका के सुनहरे अध्यायों को दर्शाया जाएगा। प्रथम मंजिल पर माँ सर्वमंगला माता के चारों ओर चलित परिक्रमा पथ होगा।
- मन्दिर के चारों ओर स्टेडियमनुमा सीढ़ियों का निर्माण किया जा रहा है, जहाँ बैठकर श्रद्धालुगण माता का मनोहारी दर्शन कर सकेंगे। मन्दिर भवन के चारों ओर नयनाभिराम बाग–बगीचे भी होंगे, जिनमें बैठकर श्रद्धालुओं को अनुपम शान्ति का अनुभव होगा।

श्री सर्वमंगला पीठम् के निर्माण में

एक ईंट हेतु मात्र 1100/– का सहयोग समर्पित कर पुण्य लाभ प्राप्त करें।

आप अपनी सहयोग राशि का चेक अथवा डिमाण्ड ड्राफ्ट 'परमशक्ति पीठ' के नाम से सम्पूर्ण भारत में किसी भी शाखा से जमा करवा सकते हैं।

5,00,000/- (पाँच लाख रुपयों) की सहयोग राशि समर्पित कर 'माँ सर्वमंगला न्यास' के न्यासी बनने हेतु सम्पर्क करें – 011-22238751, 22238757

बैंक का नाम : यूनियन बैंक ऑफ इंडिया
खाते का नाम : परमशक्ति पीठ
खाता संख्या : 520101244630425

IFS Code : UBIN0905321
MICR : 110026344
शाखा : सी–50, प्रीत विहार, दिल्ली

Rajluxmi Samvid Gurukulam Sainik School

Nalagarh (Himachal Pradesh) | C.B.S.E. Residential Boys School | (Class VI to XII) Science and Commerce

We bring out the winner in you

How We Stand Out ?

- Regular Sanskaram Classes
- Smart Classes and Experienced
- Teachers
- Indoor and Outdoor Games
- Shooting, Swimming, Horse Riding
- Integrated program for NDA,JEE and NEET preparation
- Communication Classes
- AC Hostels
- Pollution Free Environment
- Well Equipped Labs
- Healthy and Vegetarian Food

Contact for Admission

Bariyan, Tehsil : Nalagarh, Dist. : Solan (H.P.) 174101

Call us: 7876004251 & 7876430935, www.samvidgurukulam.com

वात्सल्य प्रकाशन की प्रस्तुतियाँ...

पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के पावन विचारों से युक्त साहित्य परमशक्ति पीठ के 'वात्सल्य प्रकाशन' द्वारा प्रकाशित किया जाता है, जो आपको जीवन की अनेक समस्याओं के सरल समाधान देता है। आप भी इन पुस्तकों को पढ़कर अपना जीवन सकारात्मक रूप में परिवर्तित कर सकते हैं।

वात्सल्य साहित्य

01. आत्मसुख की ओर
02. सद्गुरु - बन्धनों के मुक्तिदाता
03. योग - सफल जीवन का रहस्य
04. सार्थक जीवन के सूत्र
05. यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते
06. जीवन का परमानन्द
07. साधना के पथ पर
08. जागो भारत की नारी
09. सद्गुरु - जीवन की आवश्यकता
10. माँ - सृष्टि की धुरी
11. मुझे बचाओ माँ
12. परमशक्ति योग (हिन्दी)
13. परमशक्ति योग (अंग्रेजी)
14. यशोदा भाव - वात्सल्य ग्राम की मूल प्रेरणा
15. अनुभूति
16. पाथेय
17. व्यक्तित्व और विचार
18. मेरी स्मृतियों के भानु भैया
19. शुभाशीष
20. युगपुरुष की युगयात्रा
21. पिबत भागवतं रसमालयम्
22. नया सवेरा लाओ (काव्य संग्रह)
23. साधना के स्वर (भजन संग्रह)
24. भजन वर्षा (भजन संग्रह)
25. मेरी छोटी सी है नाव (भजन संग्रह)
26. वात्सल्य
27. श्रीमद्भगवद्गीता
28. निरामय प्राकृतिक चिकित्सा

पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भराजी के बाल्यकाल और श्रीरामजन्मभूमि संघर्ष की रोचक गाथा

साध्वी ऋतम्भरा और श्रीरामजन्मभूमि आंदोलन

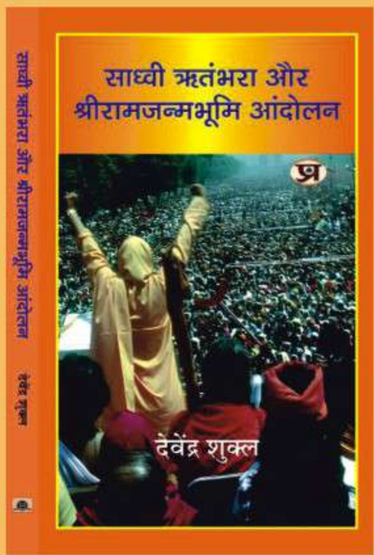

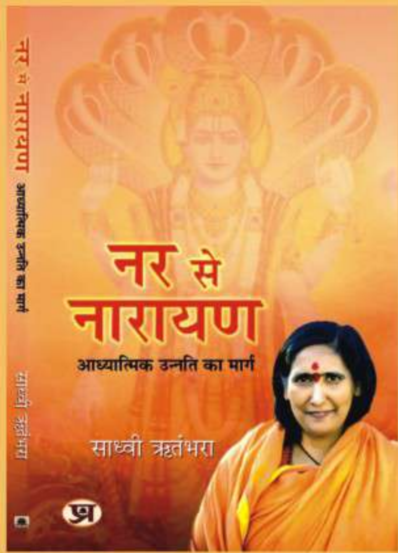

ये दोनों पुस्तकें www.prabhatbooks.com पर ऑनलाइन ऑर्डर करके घर बैठे मंगवाई जा सकती हैं

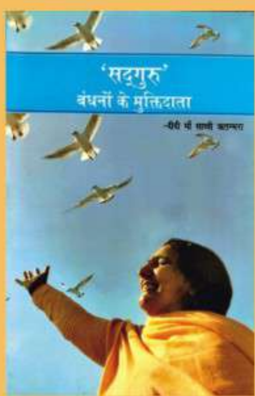

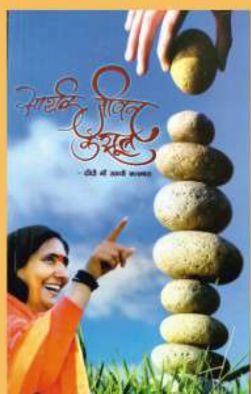

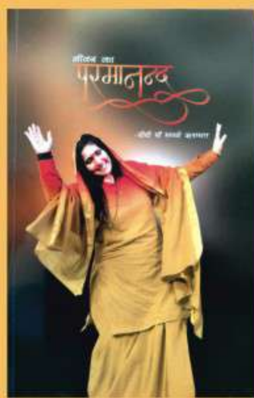

उपरोक्त साहित्य मंगवाने के लिए आप 'परमशक्ति पीठ' के निम्न पतों अथवा फोन नंबर्स पर सम्पर्क कर सकते हैं।

केन्द्रीय कार्यालय

परमशक्ति पीठ
लव-102, अग्रसेन आवास, 66 इन्द्रप्रस्थ विस्तार,
नई दिल्ली-110092
सम्पर्क फोन नं.-01122238751, 9958885858
ईमेल-info@vatsalyagram.org
वेबसाइट-www.vatsalyagram.org

शाखा कार्यालय

वात्सल्य ग्राम
मथुरा-वृन्दावन मार्ग,
पोस्ट-प्रेमनगर
वृन्दावन, जिला-मथुरा (उत्तरप्रदेश) पिन-281003
सम्पर्क फोन नंबर-9412777151

परमशक्ति पीठ

परमशक्ति पीठ के सेवा प्रकल्प

वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन

के विभिन्न प्रकल्पों हेतु आपके आर्थिक सहयोग का स्वागत है

परमशक्ति पीठ में आपका सहयोग

आजीवन सहयोगी	1,00,000/-
संस्थापक सहयोगी	5,00,000/-
कार्पोरेट सहयोगी	11,00,000/-

वत्सल निधि में आपका सहयोग

शिक्षा निधि (वार्षिक)	6000/-
वत्सल निधि (एक सुविधा) वार्षिक	24,000/-
वत्सल निधि (शिक्षा, स्वास्थ्य, भोजन, होस्टल, अन्य) वार्षिक	1,20,000/-
बच्चों का एक समय का भोजन	21,000/-

वैशिष्ट्यम् स्कूल (दिव्यांग बच्चों हेतु) में आपका सहयोग

दिव्यांग बच्चों की समुचित देखभाल हेतु (वार्षिक)	1,50,000/-

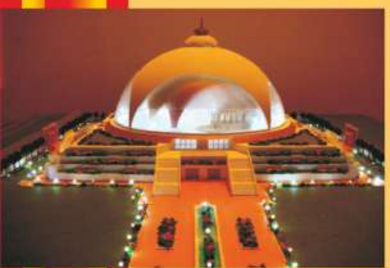

चिकित्सा सेवाओं में आपका सहयोग

वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन के प्रेमवती गुप्ता नेत्र चिकित्सालय में आयोजित होने वाले निःशुल्क मोतियाबिन्द ऑपरेशन शिविरों हेतु (एक रोगी के ऑपरेशन हेतु)	3000/-
ग्रामीण क्षेत्रों में आयोजित होने वाले निःशुल्क स्वास्थ्य शिविरों हेतु (प्रति शिविर)	51,000/-

श्री सर्वमंगला पीठम् में आपका सहयोग

संस्थापक सहयोगी	5,00,000/-
एक शिला सहयोगी	1100/-

गौ सेवा में आपका सहयोग

वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन की 'कामधेनु गौगृह गौशाला' हेतु

प्रति गौमाता सहयोग (मासिक)	3100/-
प्रति गौमाता सहयोग (वार्षिक)	36,000/-
गौवंश हेतु भूसा सहयोग (दैनिक)	11,000/-
गौवंश हेतु हरा चारा सहयोग (दैनिक)	5100/-
गौ दान राशि	50,000/-

कन्यादान

आह्वान

सौभाग्यशाली होते हैं वो वर और वधु जो सन्त शक्तियों के आशीर्वादों की छत्रछाया में दाम्पत्य जीवन की डोर से बँधते हैं। परमपिता परमेश्वर की इसी असीम अनुकम्पा की पात्र बन रही हैं, वात्सल्य परिवार की बेटियाँ। उनको आध्यात्मिक शक्तियों के सानिध्य में समाज के प्रतिष्ठित परिवारों की बहू बनते देखना अतीव आनन्द के क्षण होते हैं। परमशक्ति पीठ के माध्यम से हम उनके घर बसाने की पुण्य कार्य में संलग्न हैं। आप भी इस कार्य में उनके कन्यादान के सहभागी बनकर सामाजिक योगदान प्रदान कर सकते हैं।

साध्वी ऋतम्भरा

(सहयोग हेतु सम्पर्क करें)

परमशक्ति पीठ

लव–102, अग्रसेन आवास,
66, इन्द्रप्रस्थ विस्तार, पटपड़गंज,
नई दिल्ली –110092
दूरभाष : 9999971714, 9999971716

आप अपना सहयोग सीधे बैंक में भी जमा करा सकते हैं, खाते की विस्तृत जानकारी निम्नानुसार है :

A/c Name : Param Shakti Peeth A/c Kanyadan
A/c No. : 6023000100098186
IFSC Code : PUNB0602300
Branch Name : Mandawali, Delhi

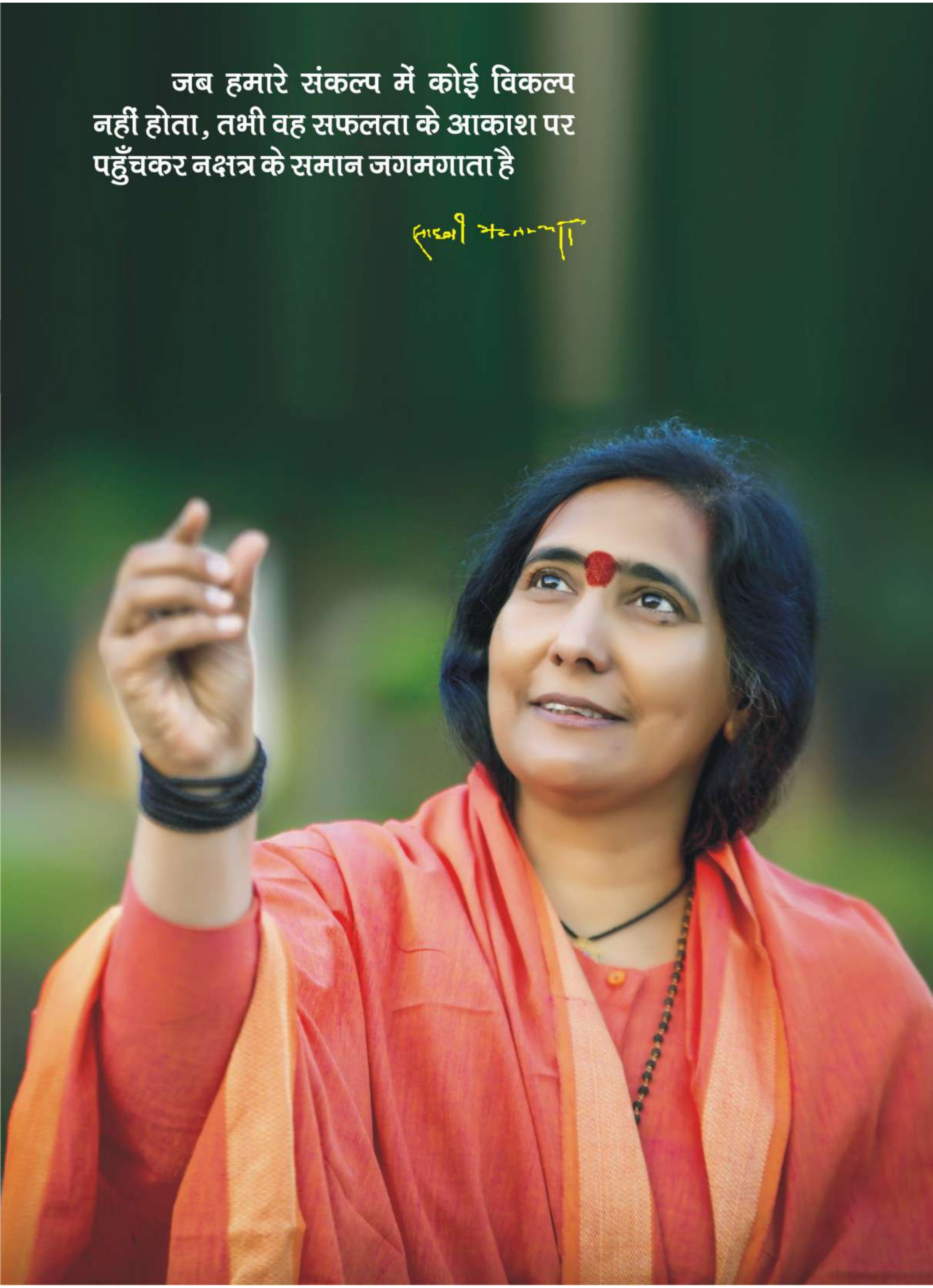
जब हमारे संकल्प में कोई विकल्प नहीं होता, तभी वह सफलता के आकाश पर पहुँचकर नक्षत्र के समान जगमगाता है

Postal Regd. No. DL(E)20/5231/2025-27
DELMUL/2006/16716
Postal Date : 9th & 10th of Every month

An ISO 9001: 2000 Certified School

Samvid Gurukulam Girls Sainik SCHOOL

CBSE affiliated (# 2131180)
Co-Education up to Class Vth; Residential and Day School for Girls
Play Group - Grade XII (Science, Commerce, Humanities)

TECHNOLOGY ENABLED SCHOOL
Powered By : Extramarks

Approved as
Girls Sainik School
by 'Sainik School Society'
Ministry of Defense

We bring out the 'winner in your child'

- State of the art infrastructure
- Low teacher student ratio
- Total Personality Development
- Wi-Fi Campus
- Counseling Cell
- Center of performing arts
- Safe guarding Indian culture as part of world heritage
- Science, Computer & Mathematics Lab
- Regular Excursions
- Centrally Air cooled Hostel for girls.
- SANSKARAM CLASSES: Learning life skills through Value Education
- NANHI DUNIYA: Introduction of children to nature
- SPORTS ACADEMY: Horse Riding, Skating Football, Hockey, Basket Ball, Lawn Tennis, Table Tennis, Judo-Karate, 400M Track
- MUSIC: Vocal & Instrumental
- DANCE: Bharatnatyam, Kathak, Contemporary
- Transport facility available

Vatsalya Gram, Mathura - Vrindavan Marg, P.O. - Prem Nagar,
Vrindavan - 281003 (U.P.) Mobile No. 94127 77152 & 94127 77154
Website : www.samvidgurukulam.org
Like us at : www.facebook.com / samvid4u
email : principal@samvidgurukulam.org